गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 225
दि. 16.12.2025,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

महाराष्ट्र में शहरी सियासत का शंखनाद, 15 जनवरी को 29 नगर निगमों में मतदान, 16 को नतीजों से तय होगी सत्ता की तस्वीर

(जीएनएस)। मुंबई। महाराष्ट्र में शहरी राजनीति की सरगर्मी एक बार फिर तेज हो गई है। राज्य चुनाव आयोग ने लंबे इंतजार के बाद 29 नगर निगमों के चुनाव की तारीखों का ऐलान कर दिया है, जिसके साथ ही राज्य में चुनावी बिगुल बज चुका है। मुंबई महानगरपालिका सहित राज्य के प्रमुख शहरी निकायों में 15 जनवरी 2026 को मतदान होगा, जबकि मतगणना 16 जनवरी को की जाएगी और उसी दिन नतीजों का ऐलान कर दिया जाएगा। इस चुनाव में कुल 3.48 करोड़ से अधिक मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे, जिनमें अकेले बृहन्मुंबई महानगरपालिका की 227 सीटें भी शामिल हैं। वर्षों से टलते आ रहे इन चुनावों को लेकर राजनीतिक दलों और मतदाताओं में खासा उत्साह देखा जा रहा है। राज्य चुनाव आयोग ने सोमवार को आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह घोषणा की। राज्य निर्वाचन आयुक्त दिनेश वाघमारे ने बताया कि मुंबई, ठाणे, नवी मुंबई, पुणे, नागपुर जैसे बड़े महानगरों समेत कुल 29 नगर निगमों में एक ही चरण में मतदान कराया जाएगा। इस बार दो नए नगर निगमों को भी चुनाव प्रक्रिया में शामिल किया गया है, जहां पहली बार जनता अपने प्रतिनिधि चुनेगी। आयोग के अनुसार, यह चुनाव सुप्रीम कोर्ट के उस निर्देश के अनुरूप कराए जा रहे हैं, जिसमें 31 जनवरी 2026 से पहले सभी लंबित स्थानीय निकाय चुनाव संपन्न कराने को कहा गया था।

चुनावी कार्यक्रम के तहत नामांकन पत्र 23 दिसंबर से 30 दिसंबर 2025 तक दाखिल किए जा सकेंगे। 31 दिसंबर को नामांकन पत्रों की जांच होगी और 2 जनवरी 2026 तक उम्मीदवार अपने नाम वापस ले सकेंगे। 3 जनवरी को अंतिम उम्मीदवार सूची और चुनाव चिह्न जारी किए जाएंगे। इसके बाद 15 जनवरी को मतदान और 16 जनवरी को मतगणना कर परिणाम घोषित किए जाएंगे। आयोग ने स्पष्ट किया है कि चुनाव प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी और समयबद्ध तरीके से कराई जाएगी।

ये नगर निगम मुंबई महानगर क्षेत्र, पश्चिम महाराष्ट्र, उत्तर महाराष्ट्र, मराठवाड़ा और विदर्भ के प्रमुख शहरी केंद्रों में फैले हुए हैं। मुंबई महानगर क्षेत्र में मुंबई, ठाणे, नवी मुंबई, कल्याण-डोंबिवली, वसई-विरार, भिवंडी, मीरा-भायंदर, उल्हासनगर और पनवेल जैसे बड़े निगम शामिल हैं। पश्चिम महाराष्ट्र में पुणे, पिंपरी-चिंचवड़, कोल्हापुर, सांगली, सोलापुर और इचलकरंजी में मतदान होगा। वहीं उत्तर महाराष्ट्र, मराठवाड़ा और विदर्भ के नगर निगमों में भी इसी दिन वोट डाले जाएंगे, जिससे पूरे राज्य की शहरी राजनीति की दिशा तय होगी।

आयोग ने यह भी बताया कि मुंबई महानगरपालिका को छोड़कर बाकी नगर निगमों में मतदाताओं को एक से अधिक उम्मीदवारों के लिए वोट देने की व्यवस्था होगी, जहां एक मतदाता एक साथ तीन, चार या पांच उम्मीदवारों को वोट दे सकेगा। इसके साथ ही मतदाता सूची को लेकर उठ रहे सवालों पर भी आयोग ने स्थिति स्पष्ट की। दिनेश वाघमारे ने कहा कि इस चुनाव में केंद्रीय चुनाव आयोग की मतदाता सूची का उपयोग किया जाएगा, जिसमें 1 जुलाई 2025 तक के आंकड़े शामिल होंगे। कुछ स्थानों पर डुप्लीकेट नाम और पते को लेकर शिकायतें मिली थीं, जिनकी जांच कर ली गई है और यह स्पष्ट किया गया है कि ये तकनीकी कारणों से हुई गड़बड़ियां थीं, न कि किसी साजिश का हिस्सा।

गौरतलब है कि मुंबई समेत राज्य की 18 नगरपालिकाओं का कार्यकाल 2022 में ही समाप्त हो गया था, जबकि कई अन्य नगर निकायों का कार्यकाल 2020 और 2023 में खत्म हो चुका था। लंबे समय से प्रशासकों के भरोसे चल रहे इन नगर निगमों में अब जनता को अपने प्रतिनिधि चुनने का मौका मिलने जा रहा है। ऐसे में यह चुनाव न सिर्फ शहरी प्रशासन की दिशा तय करेंगे, बल्कि 2026 के बाद की राज्य राजनीति पर भी गहरा असर डाल सकते हैं। राजनीतिक दलों ने भी तैयारियां तेज कर दी हैं और आने वाले दिनों में महाराष्ट्र के शहरों में चुनावी माहौल पूरी तरह गर्म होने के संकेत साफ नजर आ रहे हैं।

अंडों की थाली पर सवाल, एफएसएसएआई की देशव्यापी जांच से बढ़ी चिंता, नाइट्रोफ्यूरान के खतरे पर सतर्क हुआ तंत्र

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देशभर में अंडों की खपत को लेकर उस वक्त चिंता बढ़ गई, जब भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण ने अंडों में प्रतिबंधित रसायन नाइट्रोफ्यूरान की मौजूदगी की आशंका को गंभीरता से लेते हुए व्यापक जांच के आदेश दे दिए। एफएसएसएआई ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के खाद्य सुरक्षा अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे बाजार में बिक रहे ब्रांडेड और बिना ब्रांड वाले दोनों तरह के अंडों के नमूने एकत्र करें और उन्हें मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं में जांच के लिए भेजें। यह कदम इंटरनेट मीडिया पर वायरल हुई एक रिपोर्ट और वीडियो के बाद उठाया गया है, जिसमें दावा किया गया था कि कुछ अंडों में नाइट्रोफ्यूरान समूह की प्रतिबंधित एंटीबायोटिक दवाओं के अवशेष पाए गए हैं। नाइट्रोफ्यूरान ऐसी एंटीबायोटिक दवाओं का समूह है, जिनका इस्तेमाल भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया के कई देशों में खाद्य-उत्पादक पशुओं और पोल्ट्री में पूरी तरह प्रतिबंधित है। विशेषज्ञों के अनुसार, इन दवाओं के अवशेष लंबे समय तक अंडों और मानव शरीर में बने रह सकते हैं, जिससे गंभीर स्वास्थ्य जोखिम पैदा हो सकता है। यही वजह है कि इस मामले को हल्के में लेने के बजाय एफएसएसएआई ने देशव्यापी स्तर पर सैंपलिंग और परीक्षण का फैसला किया है, ताकि सच्चाई सामने आ सके और उपभोक्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

पूरा मामला तब चर्चा में आया, जब एक प्रीमियम अंडा ब्रांड को लेकर सोशल मीडिया पर दावे किए गए कि उसके उत्पादों में प्रतिबंधित रसायन मौजूद हैं। हालांकि संबंधित कंपनी ने इन आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए कहा है कि उसके अंडे सभी भारतीय खाद्य सुरक्षा मानकों पर खरे उतरते हैं। कंपनी ने अपने बचाव में राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड से मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला की जांच रिपोर्ट भी साझा की है। इसके बावजूद, एफएसएसएआई ने स्पष्ट किया है कि अंतिम निष्कर्ष केवल आधिकारिक जांच और परीक्षण के बाद ही निकाला जाएगा और तब तक किसी भी दावे को सही या गलत ठहराना जल्दबाजी होगी।

खाद्य सुरक्षा प्राधिकरण का कहना है कि फिलहाल नमूना संग्रह और परीक्षण की प्रक्रिया जारी है और अभी तक कोई अंतिम रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं की गई है। जांच पूरी होने के बाद ही यह तय किया जाएगा कि अंडों में नाइट्रोफ्यूरान या उससे जुड़े अवशेष वास्तव में मौजूद हैं या नहीं और यदि पाए जाते हैं तो उनके खिलाफ क्या कार्रवाई की जाएगी। इस बीच, स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने खासकर बच्चों के मामले में सतर्कता बरतने की सलाह दी है। फोर्टिस अस्पताल के बाल रोग विभाग के निदेशक डॉ. विवेक जैन के अनुसार, नाइट्रोफ्यूरान जैसे रसायन बच्चों के लिए विशेष रूप से खतरनाक हो सकते हैं। यह एक विषाक्त और कैंसर को बढ़ावा देने वाला केमिकल माना जाता है, जिसके सेवन से बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो सकती है, लिवर पर बुरा असर पड़ सकता है और शारीरिक विकास में भी बाधा आ सकती है। डॉक्टरों का कहना है कि यदि लंबे समय तक ऐसे रसायनों के संपर्क में रहा जाए, तो इसके दुष्प्रभाव गंभीर रूप ले सकते हैं।

नाइट्रोफ्यूरान मूल रूप से एक एंटीबायोटिक दवा है, जिसका उपयोग भोजन उत्पादन श्रृंखला से जुड़े जंतुओं पर पूरी तरह प्रतिबंधित है। इसके बावजूद यदि अंडों में इसके अंश मिलते हैं, तो यह साफ संकेत देता है कि कहीं न कहीं गैरकानूनी तरीके से इसका इस्तेमाल किया जा रहा है। ऐसे में एफएसएसएआई की यह जांच न केवल खाद्य सुरक्षा से जुड़ा मामला है, बल्कि उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य और भरोसे से भी सीधे तौर पर जुड़ी हुई है। अब देश की नजरें इस जांच के नतीजों पर टिकी हैं, जो यह तय करेंगे कि अंडों की प्लेट सच में सुरक्षित है या सावधानी बरतने की जरूरत है।

पहलगाम हमले की परतें खुलीं, एनआईए की चार्जशीट में पाकिस्तान प्रायोजित साजिश और लश्कर-टीआरएफ की पूरी कहानी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए भीषण आतंकी हमले को लेकर राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने बड़ा कदम उठाते हुए सात आरोपियों के खिलाफ 1597 पन्नों की विस्तृत चार्जशीट दाखिल कर दी है। यह आरोपपत्र सोमवार को जम्मू स्थित एनआईए की विशेष अदालत में पेश किया गया, जिसमें पाकिस्तान स्थित प्रतिबंधित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा और उसके सहयोगी संगठन द रेजिस्टेंस फ्रंट को एक कानूनी इकाई के रूप में सीधे तौर पर आरोपी बनाया गया है। एनआईए की इस चार्जशीट ने न सिर्फ हमले की साजिश को उजागर किया है, बल्कि यह भी साफ कर दिया है कि इस खूनी वार के पीछे सीमापार से रची गई गहरी और संगठित योजना थी। चार्जशीट के मुताबिक, पहलगाम आतंकी हमला पूरी तरह से पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी नेटवर्क की देन था, जिसमें स्थानीय मदद, ओवरग्राउंड वर्कर्स और पाकिस्तानी हैंडलरों की अहम भूमिका रही। एनआईए ने दस्तावेज में विस्तार से बताया है कि कैसे लश्कर-ए-तैयबा और टीआरएफ ने मिलकर इस हमले की योजना बनाई, आतंकियों को कश्मीर घाटी में घुसपैठ करवाई, उन्हें हथियार, रसद और ठिकाने उपलब्ध कराए और फिर पर्यटकों को निशाना बनाकर बड़े पैमाने पर दहशत फैलाने की साजिश को अंजाम दिया गया। इस हमले में धर्म के आधार पर चुनकर की गई हत्याओं में 25 पर्यटकों और एक स्थानीय नागरिक की जान चली गई थी, जिससे पूरे देश में आक्रोश फैल गया था।

एनआईए की चार्जशीट में पाकिस्तान के कुख्यात आतंकी हैंडलर साजिद जट्ट का नाम भी आरोपी के तौर पर शामिल किया गया है। इसके अलावा, उन तीन पाकिस्तानी आतंकवादियों को भी नामजद किया गया है, जिन्हें हमले के कुछ ही हफ्तों बाद जुलाई 2025 में श्रीनगर के दाचीगाम इलाके में 'ऑपरेशन महादेव' के तहत भारतीय सुरक्षा बलों ने मार गिराया था। इन आतंकियों की पहचान फैसल जट्ट उर्फ सुलेमान शाह, हबीब ताहिर उर्फ जिब्रान और हमजा अफगानी के रूप में हुई है। एनआईए का कहना है कि ये तीनों आतंकी सीधे तौर पर पहलगाम हमले में शामिल थे और उन्होंने जमीनी स्तर पर हमले को अंजाम दिया था।

चार्जशीट में इन सभी आरोपियों पर भारतीय न्याय संहिता 2023, शस्त्र अधिनियम 1959 और गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम 1967 की गंभीर धाराएं लगाई गई हैं। इसके साथ ही, भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ने जैसी दंडात्मक धाराओं का भी इस्तेमाल किया गया है, जो इस बात को रेखांकित करता है कि एजेंसी इस हमले को केवल आतंकी घटना नहीं, बल्कि देश की संप्रभुता और सुरक्षा पर सीधा हमला मान रही है।

एनआईए ने बताया कि इस मामले की जांच लगभग आठ महीने तक चली, जिसमें आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी तरीकों का इस्तेमाल किया गया। डिजिटल सबूत, कॉल डिटेल रिकॉर्ड, फाइनेंशियल ट्रांजैक्शन, गवाहों के बयान और जमीनी जांच के जरिए यह स्पष्ट हुआ कि साजिश की जड़ें सीधे पाकिस्तान में थीं। जांच के दौरान यह भी सामने आया कि आतंकियों को स्थानीय स्तर पर पनाह और मदद देने वाले लोग भी इस नेटवर्क का हिस्सा थे। इसी सिलसिले में 22 जून 2025 को गिरफ्तार किए गए परवेज अहमद और बशीर अहमद जोथड़ के खिलाफ भी चार्जशीट दाखिल की गई है। पूछताछ में दोनों ने न सिर्फ तीनों सशस्त्र आतंकियों की पहचान की पुष्टि की, बल्कि यह भी स्वीकार किया कि वे प्रतिबंधित लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े पाकिस्तानी नागरिक थे और उन्हें जानबूझकर मदद दी गई थी। एनआईए की इस चार्जशीट को पहलगाम आतंकी हमले के पीड़ितों के लिए न्याय की दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है। एजेंसी का कहना है कि वह इस मामले में आगे भी जांच जारी रखेगी और पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के पूरे नेटवर्क को कानून के शिकंजे में लाने के लिए हर संभव कार्रवाई करेगी। इस खुलासे के बाद एक बार फिर यह साफ हो गया है कि कश्मीर में आतंक फैलाने के पीछे सीमापार से संचालित साजिशें लगातार सक्रिय हैं और भारत की जांच एजेंसियां उन्हें बेनकाब करने के लिए पूरी तरह सतर्क और प्रतिबद्ध हैं।

तीन देशों की कूटनीतिक यात्रा पर निकले प्रधानमंत्री मोदी, पहले पड़ाव में जॉर्डन पहुंचे, रिश्तों को नई ऊंचाई देने की उम्मीद

(जीएनएस)। अम्मान। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को तीन देशों की अहम विदेश यात्रा के पहले चरण में जॉर्डन की राजधानी अम्मान पहुंचे, जहां उनका भव्य और गर्मजोशी से स्वागत किया गया। हवाईअड्डे पर जॉर्डन के प्रधानमंत्री जाफर हसन ने स्वयं उनकी अगवानी की, जो दोनों देशों के बीच बढ़ती नजदीकी और आपसी सम्मान को दर्शाता है। यह दौरा जॉर्डन के राजा किंग अब्दुल्ला द्वितीय बिन अल हुसैन के विशेष निमंत्रण पर हो रहा है और इसका मुख्य उद्देश्य भारत-जॉर्डन के द्विपक्षीय संबंधों को और अधिक मजबूत करना है। खास बात यह है कि भारत और जॉर्डन के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर यह प्रधानमंत्री मोदी की पहली आधिकारिक द्विपक्षीय यात्रा है, जिसे दोनों देशों के रिश्तों में एक नई शुरुआत के रूप में देखा जा रहा है। अम्मान पहुंचने के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया साझा करते हुए विश्वास जताया कि यह यात्रा भारत और जॉर्डन के संबंधों को नई गति और नई दिशा देगी। होटल पहुंचने पर भारतीय समुदाय के लोगों ने उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया। इस अवसर पर स्थानीय कलाकारों द्वारा प्रस्तुत भारतीय पारंपरिक नृत्यों ने माहौल को सांस्कृतिक रंगों से भर दिया और दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक जुड़ाव को भी मजबूती मिली।

इस दौरे के दौरान प्रधानमंत्री मोदी जॉर्डन के राजा किंग अब्दुल्ला द्वितीय के साथ एकल और प्रतिनिधिमंडल स्तर की बातचीत करेंगे। इन बैठकों में भारत-जॉर्डन संबंधों के राजनीतिक, आर्थिक, रक्षा, व्यापार, निवेश, शिक्षा और सांस्कृतिक सहयोग जैसे सभी महत्वपूर्ण पहलुओं की व्यापक समीक्षा की जाएगी। इसके साथ ही पश्चिम एशिया की मौजूदा स्थिति सहित कई क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर भी विचार-विमर्श होने की संभावना है। दोनों नेता आपसी सहयोग को भविष्य की जरूरतों के अनुरूप और अधिक मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा करेंगे।

मंगलवार को प्रधानमंत्री मोदी भारत-जॉर्डन व्यापार कार्यक्रम को भी संबोधित करेंगे, जहां दोनों देशों के उद्योगपतियों, निवेशकों और कारोबारी प्रतिनिधियों की मौजूदगी में व्यापार और निवेश के नए अवसरों पर चर्चा होगी। इस कार्यक्रम से भारत और जॉर्डन के बीच आर्थिक साझेदारी को नई दिशा मिलने की उम्मीद जताई जा रही है। जॉर्डन यात्रा के बाद प्रधानमंत्री मोदी 16 से 17 दिसंबर तक इथोपिया के दौरे पर जाएंगे। वहां वे इथोपिया के प्रधानमंत्री डॉ. अबी अहमद अली से मुलाकात करेंगे और देश की संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करेंगे। इस दौरान भारत और अफ्रीकी देशों के बीच सहयोग को और गहरा करने पर जोर रहेगा। यात्रा के अंतिम चरण में प्रधानमंत्री मोदी 17 से 18 दिसंबर तक ओमान में रहेंगे, जहां वे ओमान के सुल्तान हैथम बिन तारिक से मुलाकात करेंगे। इस बैठक में रणनीतिक, आर्थिक और व्यापारिक सहयोग को आगे बढ़ाने के साथ-साथ खाड़ी क्षेत्र में भारत की भूमिका और साझेदारी को मजबूत करने पर चर्चा होने की संभावना है। तीन देशों की यह यात्रा भारत की सक्रिय और संतुलित विदेश नीति को रेखांकित करती है और वैश्विक मंच पर भारत की बढ़ती भूमिका को और सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

लालकिले धमाके की जांच तेज, शोएब और डॉक्टर नसीर की एनआईए हिरासत चार दिन और बढ़ी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली के ऐतिहासिक लालकिले के पास हुए धमाके से जुड़े मामले में जांच की रफ्तार और तेज हो गई है। पटियाला हाउस कोर्ट ने सोमवार को इस मामले के दो अहम आरोपियों शोएब और डॉक्टर नसीर बिलाल मल्ला की एनआईए हिरासत चार दिन के लिए और बढ़ा दी। दोनों को कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच अदालत में पेश किया गया, जहां राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने पूछताछ पूरी न हो पाने का हवाला देते हुए हिरासत बढ़ाने की मांग की। कोर्ट ने एनआईए के तर्कों को स्वीकार करते हुए हिरासत अवधि बढ़ाने का आदेश दिया। फरीदाबाद निवासी शोएब को उसकी दस दिन की हिरासत अवधि पूरी होने के बाद कोर्ट में पेश किया गया था, जबकि जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले के रहने वाले डॉक्टर नसीर बिलाल मल्ला की सात दिन की हिरासत भी सोमवार को समाप्त हो गई थी। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश अंजू बजाज चांदना की अदालत में दोनों आरोपियों को पेश किया गया, जहां एनआईए ने दलील दी कि मामले से जुड़े कई अहम पहलुओं पर अभी पूछताछ बाकी है और कुछ महत्वपूर्ण सुराग सामने आ सकते हैं। इसके बाद अदालत ने चार दिन की अतिरिक्त हिरासत की अनुमति दे दी।

यह मामला 10 नवंबर को लालकिले के पास हुए धमाके से जुड़ा है, जिसने राजधानी की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए थे। एनआईए का आरोप है कि शोएब ने हमले के मुख्य आरोपी उमर-उन-नबी को वारदात से पहले ठिकाना मुहैया कराया था और उसे अन्य जरूरी लॉजिस्टिक मदद भी दी थी। जांच एजेंसी का कहना है कि शोएब की भूमिका सिर्फ शरण देने तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह हमले की तैयारी और उसके बाद की गतिविधियों में भी शामिल रहा। वहीं, डॉक्टर नसीर बिलाल मल्ला पर भी गंभीर आरोप लगाए गए हैं। एनआईए के अनुसार, नसीर ने उमर-उन-नबी को शरण दी, उसे सहायता पहुंचाई और बाद में हमले से जुड़े सबूतों को नष्ट करने में भी भूमिका निभाई। एजेंसी का दावा है कि नसीर की मदद से आरोपी कुछ समय तक जांच एजेंसियों की नजर से बचा रहा। एनआईए ने अदालत को बताया कि डॉक्टर नसीर इस पूरे मामले में गिरफ्तार किया गया आठवां आरोपी है और उसकी भूमिका की गहन जांच अभी जारी है।

अदालत में सुनवाई के दौरान एनआईए ने यह भी कहा कि पूछताछ के दौरान कुछ अहम जानकारियां सामने आई हैं, जिनकी कड़ियां जोड़ना और अन्य संभावित आरोपियों तक पहुंचना जरूरी है। इसी वजह से हिरासत बढ़ाने की मांग की गई। कोर्ट ने मामले की गंभीरता और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े पहलुओं को देखते हुए एनआईए को और समय देने का फैसला किया। लालकिले जैसे संवेदनशील इलाके के पास हुए इस धमाके को लेकर सुरक्षा एजेंसियां पहले से ही सतर्क हैं और एनआईए पूरे नेटवर्क को उजागर करने में जुटी है। जांच एजेंसी का कहना है कि वह इस मामले में किसी भी साजिश की कड़ी को अधूरा नहीं छोड़ना चाहती। आने वाले दिनों में पूछताछ के बाद इस केस में और खुलासे होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा रहा है।

संपादकीय

प्रेम-विवाह पर राजी

बदलते वक्त की धारा में युवाओं में बढ़ते प्रेम विवाह के रुझान को देखते हुए अब तक कठोर रही खापों ने भी रुख बदला है। जैसे कह रहे हों कि यदि मां-बाप राजी तो क्या करेगा काजी। पिछले महीने उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जनपद के गांव सोरम में देशभर की खाप पंचायतें तीन दिन तक जुटीं। जिसमें हरियाणा, पंजाब, उ.प्र., उत्तराखंड, एमपी, छत्तीसगढ़, बिहार, राजस्थान आदि की विभिन्न जाति-धर्मों की 36 खाप बिरादरियों के प्रतिनिधि जुटे। रोचक यह है कि एक लाख से अधिक भागीदारों में आधे करीब 20-35 वर्ष के युवा थे। वजह यह भी थी कि खापों की सख्ती से बड़ी संख्या में युवाओं की शादी नहीं हो पा रही है। हालांकि, इस पंचायत में मौजूदा सामाजिक चुनौतियों मसलन इज्जत के नाम पर होने वाली हत्याएं, दहेज,भ्रूण-हत्या,मृत्यु-भोज जैसी कुरीतियों पर व्यापक विमर्श हुआ, लेकिन प्रेम विवाह का मुद्दा मुखरता से छाया रहा। महत्वपूर्ण बात यह रही कि सर्वखाप ने तय किया कि यदि माता-पिता की सहमति से प्रेम विवाह होता है तो खाप हस्तक्षेप नहीं करेगी। सर्वखाप पंचायत में देश की सबसे बड़ी बालियान खाप के प्रधान नरेश टिकैत का कहना था कि यहां इतने ज्यादा लोग इसलिए जुटे हैं कि मुद्दे कोई राजनीतिक या किसानों के न होकर, प्रेम-विवाह, अंतरजातीय विवाह शुरू करने, दहेज न लेने, मृत्युभोज बंद करने जैसे ज्वलंत विषयों से जुड़े रहे। आम राय रही है कि जिस विवाह को लेकर मां-बाप की सहमति होगी, उसमें समाज, रिश्तेदार अथवा खाप हस्तक्षेप नहीं करेगी।

दरअसल, खापों के रवैये में लचीलापन आने की एक बड़ी वजह यह रही है कि युवा तेजी से प्रेम विवाह की तरफ उन्मुख हैं। लेकिन जहां ऐसा करने में सख्ताई है वहां बड़ी संख्या में युवा कुंआरे बने हुए हैं। हरियाणा, उ.प्र व एनसीआर के कई गांवों में सैकड़ों की कुंआरों की फौज खड़ी हैं। अब यह सोच बन रही है कि प्रेम विवाहों से समाज की कई बुराइयां व मुश्किलें भी कम हो रही हैं। बदलते वक्त के साथ परंपरागत शादियों में अलगाव, तलाक व टकराव के मामले हालिया सालों में बढ़े हैं। कई नेताओं में इस बात को लेकर सहमति बनाने की कोशिश हुई कि जिन जातियों में घड़ा व हुक्का-पानी एक है, उनमें शादियों की शुरुआत होनी चाहिए। समान कद वाली जातियों में भी शादी की बात छेड़ी गई, लेकिन इस पर कोई सहमति नहीं बनी। साथ ही समान गोत्र की खेतिहर जातियों में भी विवाह पर विचार हुआ। कई लोग उदाहरण देते रहे कि जाटों के सबसे बड़े नेता रहे चौधरी चरण सिंह ने अपनी तीन बेटियों व बेटे की अंतरजातीय शादी की। बताया जा रहा है कि जातीय अस्मिता और किसान संस्कृति की ध्वजवाहक जाट बिरादरी में विवाह से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर गंभीर मंथन चल रहा है। वहीं दूसरी ओर कई खापों के नेता इस बात को नकारते दिखे कि डीएनए मिक्सिंग से आने वाली पीढ़ियां कमजोर होती हैं। तर्क दिया गया कि शरीर विज्ञान से जुड़ा कोई शोध-अनुसंधान इस बात की पुष्टि नहीं करता। बहरहाल, खापों की सकारात्मक सोच युवाओं के लिये नई उम्मीद लेकर आई है।

लौहपुरुष सरदार पटेल और एकीकृत भारत की नींव

> वल्लभ भाई पटेल वकालत की पढ़ाई करने के लिए सन् 1905 में इंग्लैंड जाना चाहते थे लेकिन पोस्टमैन ने उनका पासपोर्ट और टिकट उनके भाई विठ्ठल भाई पटेल को सौंप दिए। दोनों भाइयों का शुरूआती नाम वी. जे. पटेल था, ऐसे में बड़ा होने के नाते उस समय विट्ठल भाई ने स्वयं इंग्लैंड जाने का निर्णय लिया।

राष्ट्रीय एकता के प्रति सरदार पटेल की निष्ठा आजादी के इतने वर्षों बाद भी पूरी तरह प्रासंगिक है। एकता की मिसाल कहे जाने वाले सरदार वल्लभ भाई पटेल गुजरात के नाडियाद में एक किसान परिवार में 31 अक्तूबर 1875 को जन्मे थे, जिन्होंने सदैव देश की एकता को सर्वोपरि माना। सरदार पटेल ने भारत को खण्ड-खण्ड करने की अंग्रेजों की साजिशों को नाकाम करते हुए बड़ी ही कुशलता से आजादी के बाद करीब 550 देशी रियासतों तथा रजवाड़ों का एकीकरण करते हुए अखण्ड भारत के निर्माण में सफलता हासिल की थी। राजनीतिक और कूटनीतिक क्षमता का परिचय देते हुए स्वतंत्र भारत को एकजुट करने का असाधारण कार्य बेहद कुशलता से सम्पन्न करने के लिए जाने जाते रहे सरदार पटेल का देहांत दिल का दौरा पड़ने के कारण 15 दिसम्बर 1950 को 75 वर्ष की आयु में हो गया था और इसी दिन को प्रतिवर्ष 'सरदार पटेल स्मृति दिवस' के रूप में मनाया जाता है। देश के पहले गृहमंत्री और पहले उप-प्रधानमंत्री रहे सरदार पटेल का भारत के राजनीतिक एकीकरण के लिए अविस्मरणीय योगदान रहा। सरदार पटेल ने लंदन से वकालत की पढ़ाई पूरी कर अहमदाबाद में प्रैक्टिस शुरू की थी। वे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों से अत्यधिक प्रेरित हुए और इसीलिए उन्होंने गांधी जी के साथ भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में हिस्सा लिया। वे भाई-भतीजावाद की राजनीति के सख्त खिलाफ थे और ईमानदारी के ऐसे पर्याय थे कि उनके देहांत के बाद जब उनकी सम्पत्ति के बारे में जानकारियां जुटाई गई तो पता चला कि उनकी निजी सम्पत्ति के नाम पर उनके पास कुछ नहीं था। वह जो भी कार्य करते थे, पूरी ईमानदारी, समर्पण, निष्ठा और हिम्मत से साथ पूरा किया करते थे।

उनके जीवन से जुड़े कई ऐसे प्रसंग सामने आते हैं, जो इस महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कुशल प्रशासक के जीवन को समझने में सहायक हैं।

एक किसान परिवार में जन्मे वल्लभ भाई पटेल जब छोटे थे, तब अपने पिताजी के साथ खेत पर जाया करते थे। एक दिन जब उनके पिताजी खेत में हल चला रहे थे तो वल्लभ भाई पटेल उन्हीं के साथ चलते-चलते पहाड़े याद कर रहे थे। उसी दौरान उनके पांव में एक बड़ा सा कांटा चुभ गया किन्तु वे हल के पीछे चलते हुए पहाड़े कंठस्थ करने में इस कदर लीन हो गए कि उन पर कांटा चुभने का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ा। जब एकाएक उनके पिताजी की नजर उनके पांव में घुसे बड़े से कांटे और बहते खून पर पड़ी तो उन्होंने घबराते हुए बैलों को रोका और बेटे वल्लभ भाई के पैर से कांटा निकालते हुए घाव पर पत्ते लगाकर खून बहने से रोका। बेटे की यह एकाग्रता और तन्मयता देखकर वे बहुत खुश हुए और जीवन में कुछ बड़ा कार्य करने का आशीर्वाद दिया।

वल्लभ भाई पटेल वकालत की पढ़ाई करने के लिए सन् 1905 में इंग्लैंड जाना चाहते थे लेकिन पोस्टमैन ने उनका पासपोर्ट और टिकट उनके भाई विठ्ठल भाई पटेल को सौंप दिए। दोनों भाइयों का शुरूआती नाम वी. जे. पटेल था, ऐसे में बड़ा होने के नाते उस समय विट्ठल भाई ने स्वयं इंग्लैंड जाने का निर्णय लिया। वल्लभ भाई पटेल ने बड़े भाई के निर्णय का सम्मान करते हुए न केवल बड़े भाई को अपना पासपोर्ट और टिकट दे दिया बल्कि इंग्लैंड में रहने के लिए उन्हें कुछ धनराशि भी भेजी।

सरदार पटेल का जीवन कितना सादगीपूर्ण था और उनका स्वभाव कितना सहज तथा नम्र था, यह इस किस्से से आसानी से समझा जा सकता है। सरदार पटेल उन दिनों भारतीय लेजिस्लेटिव असेंबली के अध्यक्ष थे। असेंबली के कार्यों से निवृत्त होकर एक दिन जब वे घर के लिए निकल ही रहे थे, तभी एक अंग्रेज दम्पत्ति वहां पहुंचा, जो विदेश से भारत घूमने के लिए आया था। सरदार पटेल सादे वस्त्रों में रहते थे और उन दिनों उनकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी। अंग्रेज दम्पत्ति ने इस वेश में देखकर उन्हें वहां का चपरासी समझ लिया और असेंबली में घुमाने के लिए कहा। सरदार पटेल ने बड़ी ही विनम्रता से उनका यह आग्रह स्वीकार करते हुए उन्हें पूरे असेंबली भवन में घुमाया। इससे खुश होकर दम्पति ने सरदार पटेल को बख्शीश में एक रुपया देने का प्रयास किया लेकिन सरदार पटेल ने अपनी पहचान उजागर न करते हुए विनम्रतापूर्वक लेने से इन्कार कर दिया। अगले दिन जब असेंबली की बैठक हुई तो वह अंग्रेज दम्पत्ति लेजिस्लेटिव असेंबली की कार्रवाई देखने के लिए दर्शक दीर्घा में पहुंचा और सभापति के आसन पर बढ़ी हुई दाढ़ी तथा सादे वस्त्रों वाले उसी शख्स को देखकर दंग रह गया। वह मन ही मन ग्लानि से भर उठा कि जिस शख्स को चपरासी समझकर उन्होंने उसे असेम्बली घुमाने के लिए कहा, वो कोई और नहीं बल्कि खुद इस असेंबली के अध्यक्ष हैं। अंग्रेज दम्पत्ति सरदार पटेल की सादगी, सहज स्वभाव और नम्रता का कायल हो गया और उसने असेम्बली की कार्रवाई के बाद सरदार पटेल से क्षमायाचना की। एकीकृत भारत की निर्माता यह महान् शख्सियत 15 दिसम्बर 1950 को चिरनिद्रा में लीन हो गई।

प्रेरणा

स्वयं को जानने की साधना: आत्मबोध से ही खुलता है अध्यात्म का द्वार

अध्यात्म की यात्रा बाहर से भीतर की ओर बढ़ने की यात्रा है। मनुष्य जीवन भर देवालयों, ग्रंथों, मंत्रों और विधियों में सत्य को खोजता रहता है, किंतु शास्त्र बार-बार संकेत देते हैं कि सत्य का वास्तविक निवास स्थान स्वयं मनुष्य के भीतर है। आत्मसाक्षात्कार को ही साधना का मूल और अध्यात्म का परम लक्ष्य कहा गया है, क्योंकि जब तक मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचानता, तब तक उसकी साधना अधूरी ही रहती है। आत्मबोध कोई कल्पना नहीं, बल्कि चेतना का वह जागरण है, जहां व्यक्ति स्वयं को शरीर और मन से अलग अनुभव करने लगता है। शास्त्रों में आत्मा को चेतना का स्वरूप बताया गया है। ऋषि वशिष्ठ के अनुसार प्रत्येक जीव में जो जानने-समझने की शक्ति है, वही आत्मतत्व है। यह आत्मा न किसी धर्म विशेष की बपौती है और न किसी एक पंथ की सीमा में बंधी हुई है। यही कारण है कि संसार के सभी धर्मों और दर्शनों की जड़ में आत्मा का ही विचार विद्यमान है। सनातन परंपरा में आत्मशुद्धि, आत्मज्ञान और आत्मप्रकाश की चर्चा बार-बार मिलती है। ऋषि-महर्षि, साधु-संत और परमहंसों की साधना का केंद्र सदैव यही आत्मतत्व रहा है, क्योंकि इसी के बोध से जीवन का वास्तविक अर्थ प्रकट होता है। आत्मप्रकाश को लेकर साधक के मन में अनेक प्रश्न उठते हैं। क्या आत्मा साधना से प्रकाशित होती है या वह पहले से ही प्रकाशस्वरूप है। यदि आत्मा हर जीव में समान रूप से विद्यमान है, तो फिर किसी में अज्ञान और किसी में ज्ञान क्यों दिखाई देता है। वास्तव में आत्मा स्वयंप्रकाश है, उसमें कोई कमी नहीं है। अंतर केवल इतना है कि मनुष्य का मन और बुद्धि उस प्रकाश को ढक लेते हैं। जैसे सूर्य सदा प्रकाशमान रहता है, लेकिन बादल उसकी रोशनी को छिपा देते हैं, उसी प्रकार आत्मा का प्रकाश मन के आवरण से छिप जाता है।

इसी संदर्भ में आत्मसाक्षात्कार शब्द का वास्तविक अर्थ समझना आवश्यक हो जाता है। आत्मा को देखना या प्राप्त करना आत्मसाक्षात्कार नहीं है, क्योंकि आत्मा तो सदा हमारे साथ है। आत्मसाक्षात्कार का अर्थ है उस सत्य को अनुभव करना, जिसे हम अब तक अनदेखा करते आए हैं। यह अनुभव किसी बाहरी चमत्कार से नहीं, बल्कि भीतर की गहरी शांति और स्पष्टता से प्रकट होता है। यही कारण है कि आत्मसाक्षात्कार को विज्ञान कहा गया है, जिसे ऋषियों ने प्रयोग, अनुभव और साधना के माध्यम से जाना।

आत्मा शाश्वत और अमूर्त है। उसका अनुभव इंद्रियों से नहीं किया जा सकता, क्योंकि इंद्रियां केवल स्थूल जगत को ही ग्रहण करती हैं। हम जो सोचते हैं, जो निर्णय लेते हैं, वे मन और बुद्धि के स्तर पर घटित होते हैं। आत्मा इन सबकी साक्षी बनी रहती है। जीवन में घटने वाली घटनाएं, सुख-दुख, हानि-लाभ आत्मा को स्पर्श नहीं करते। शास्त्र कहते हैं कि ये सब कर्म और काल के अधीन हैं, जबकि आत्मा काल से परे है। इसलिए आत्मा को न दुख होता है, न सुख, वह केवल साक्षी भाव में स्थित रहती है।

मनुष्य जिन अनुभूतियों को आत्मिक मान लेता है, वे वास्तव में शारीरिक और मानसिक स्तर की होती हैं। शरीर को ठंड-गर्मी लगती है, जीभ स्वाद पहचानती है, आंख रूप देखती है और मन अच्छा-बुरा तय करता है। हित और अहित की यह धारणा भी स्थायी नहीं होती। जो आज हितकारी लगता है, वही कल अहितकारी प्रतीत हो सकता है। मन किसी वस्तु को पाने में सुख अनुभव करता है और प्राप्ति के बाद उसी से ऊब जाता है। यह चंचलता मन की है, आत्मा की नहीं। आत्मा की यात्रा शरीर और मन की यात्रा से भिन्न है। शरीर समय के साथ बदलता है, मन अनुभवों से रूपांतरित होता है, बुद्धि ज्ञान से परिष्कृत होती है, किंतु आत्मा सदा एक-सी रहती है। जब व्यक्ति का दर्शन बदलता है, तो उसकी दृष्टि बदल जाती है और दृष्टि बदलते ही संसार का स्वरूप भी बदल जाता है। व्यक्ति कर्म करता है, लेकिन कर्म की शुद्धि का बोध तभी होता है, जब वह आत्मा के स्तर पर स्वयं को समझने लगता है।

शास्त्रों में कहा गया है—'शरीर खलु धर्म साधनम्'। इसका अर्थ यह नहीं कि शरीर ही धर्म है, बल्कि यह कि शरीर धर्म को साधने का साधन है। धर्म का अर्थ यहां पूजा-पाठ नहीं, बल्कि वह मूल स्वभाव है, जिसके अनुसार कोई तत्व कार्य करता है। जैसे अग्नि का धर्म जलाना है, वैसे ही आत्मा का भी अपना धर्म है। आत्मा बिना किसी भेदभाव, स्वार्थ या अपेक्षा के अपने धर्म का निर्वाह करती है। उसी धर्म को जानना और पहचानना जीवन का मूल उद्देश्य है।

अक्सर मनुष्य धर्म को बाहरी आचरण और पहचान से जोड़ लेता है, जबकि वास्तविक धर्म आत्मा के स्तर पर घटित होता है। आत्मा का धर्म ही वास्तविक धर्म है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं कि आत्मा न जन्म लेती है, न मरती है। वह अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है। यदि आत्मा पुरातन है, तो हमारी यात्रा भी केवल इस जन्म तक सीमित नहीं हो सकती। शरीर नया है, लेकिन आत्मा अत्यंत प्राचीन है।

आत्मसाक्षात्कार का अर्थ इसी प्राचीन यात्रा से परिचित होना है। आत्मा की यात्रा निरंतर चलती रहती है, उसके अनेक पड़ाव होते हैं, जो समय-समय पर सामने आते हैं। जब साधक को आत्मतत्व का बोध होता है, तो उसे जीवन की दिशा स्पष्ट दिखाई देने लगती है। इसी अवस्था में ऋषि त्रिकालदर्शी कहे गए, क्योंकि वे आत्मा की यात्रा को समय से परे देख पा रहे थे।

यही बोध 'अहम् ब्रह्मास्मि' का सार है। यह अहंकार का नहीं, बल्कि आत्मज्ञान का उद्घोष है। जब मनुष्य इस सत्य को अनुभव करता है, तब अध्यात्म कोई लक्ष्य नहीं रह जाता, बल्कि जीवन की सहज अवस्था बन जाता है। आत्मबोध के साथ ही साधना पूर्ण होती है और जीवन स्वयं साधना में परिवर्तित हो जाता है।

भाजपा में युवा नेतृत्व की नई आहट पर भरोसा

भारतीय राजनीति में लंबे समय से जिस क्षण की प्रतीक्षा थी, वह अब एक निर्णायक मोड़ पर आ खड़ी हुई है। दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी भारतीय जनता पार्टी ने अपने राष्ट्रीय नेतृत्व की बागडोर युवा हाथों में सौंपने की दिशा में ऐतिहासिक कदम उठाते हुए नितिन नबीन को पार्टी का नया कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया है। यद्यपि यह नियुक्ति औपचारिक रूप से अस्थायी कही जा रही है, किंतु जिस प्रकार से इस निर्णय का पार्टी के भीतर और बाहर स्वागत हो रहा है, उससे यह संकेत स्पष्ट हैं कि भविष्य में उन्हें ही पूर्णकालिक राष्ट्रीय अध्यक्ष घोषित किया जा सकता है। यह नियुक्ति केवल एक संगठनात्मक बदलाव नहीं, बल्कि भारतीय राजनीति की कार्यशैली, नेतृत्व-चयन और भविष्य-दृष्टि में आए एक बड़े परिवर्तन का उद्घोष है। भारतीय जनता पार्टी संसदीय बोर्ड का यह निर्णय न केवल चौंकाने वाला है, बल्कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अब तक लिए गए साहसिक, अप्रत्याशित और दूरगामी परिणाम देने वाले निर्णयों की श्रृंखला का एक नया और महत्वपूर्ण अध्याय भी है। नितिन नबीन बिहार की राजनीति में कोई नया नाम नहीं हैं। वे पांच बार विधायक रह चुके हैं और जमीनी राजनीति की बारीकियों से भलीभांति परिचित हैं। संगठन और सरकार-दोनों के अनुभव से संपन्न नितिन नबीन ने भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय महासचिव जैसे महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन किया है। इसके साथ ही संगठन के विभिन्न स्तरों पर उन्होंने जिस अनुशासन, रणनीतिक समझ और नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया है, वही उन्हें इस पद के लिए स्वाभाविक विकल्प बनाता है। उनका राजनीतिक व्यक्तित्व केवल भाषणों तक सीमित नहीं, बल्कि संगठन खड़ा करने, कार्यकर्ताओं को जोड़ने और वैचारिक प्रतिबद्धता बनाए रखने की क्षमता से परिपूर्ण है। यही गुण भाजपा की आत्मा भी है-जहां व्यक्ति नहीं, संगठन सर्वोपरि होता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की राजनीति का एक स्थायी गुण रहा है-नए चेहरों पर भरोसा और पीढ़ीगत नेतृत्व का निर्माण। चाहे वह केंद्र सरकार में मंत्रियों का चयन हो, राज्यों में मुख्यमंत्रियों की नियुक्ति हो या संगठन में बदलाव-मोदी ने बार-बार यह साबित किया है कि वे भविष्य की राजनीति को आज गढ़ने में विश्वास रखते हैं। नितिन नबीन का चयन भी इसी विचारधारा का प्रतिफल है। यह निर्णय संकेत देता है कि भाजपा अब केवल चुनाव जीतने की पार्टी नहीं रहना चाहती, बल्कि अगले दो-तीन दशकों के लिए एक स्थायी वैचारिक और संगठनात्मक नेतृत्व तैयार कर रही है। युवा पीढ़ी, विशेषकर पहली बार वोट देने वाले मतदाताओं को आकर्षित करने की दृष्टि से यह कदम अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भाजपा में राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद केवल संगठनात्मक नहीं, बल्कि वैचारिक संतुलन का केंद्र भी होता है। इस पद पर नियुक्ति के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सहमति और समर्थन अनिवार्य माना जाता है। भाजपा की चुनावी सफलताओं में संघ की भूमिका सदैव निर्णायक रही है-चाहे वह विचार-प्रसार हो, कार्यकर्ता निर्माण हो या सामाजिक संपर्क। पिछले कुछ चुनावों में जिन परिस्थितियों का सामना पार्टी को करना पड़ा, उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि भाजपा संगठन और संघ के बीच पूर्ण सामंजस्य कितना आवश्यक है। ऐसे में नितिन नबीन का चयन यह संकेत देता है कि संघ और पार्टी नेतृत्व के बीच गहन विमर्श और सहमति के बाद ही यह निर्णय लिया गया है। यह नियुक्ति भाजपा को वैचारिक रूप से और अधिक सुदृढ़ करने की दिशा में एक ठोस प्रयास है।

नितिन नबीन के सामने सबसे बड़ी और तात्कालिक चुनौती पश्चिम बंगाल के आगामी चुनाव हैं। यह राज्य लंबे समय से भाजपा के लिए रणनीतिक और वैचारिक दोनों ही दृष्टियों से महत्वपूर्ण रहा है। यहां केवल सत्ता की लड़ाई नहीं, बल्कि राजनीतिक संस्कृति, राष्ट्रवाद और सामाजिक संतुलन की भी परीक्षा होती है। एक संगठनात्मक अध्यक्ष के रूप में नितिन नबीन की वास्तविक कसौटी यहीं होगी। यदि वे बंगाल में संगठन को नई धार देने, कार्यकर्ताओं में ऊर्जा भरने और जनता के बीच विश्वास स्थापित करने में सफल होते हैं, तो उनका नेतृत्व स्वतः ही प्रमाणित हो जाएगा। यही वह मंच है, जहां उनका रुतबा, कौशल और रणनीतिक दृष्टि राष्ट्रीय राजनीति के सामने स्पष्ट होगी।

भाजपा की राजनीति में एक विशेष परंपरा रही है-जहां कयास कुछ और होते हैं और निर्णय बिल्कुल अलग दिशा से आता है। अनेक नाम चर्चा में रहते हैं, अनेक चेहरे मंजिल के निकट आकर भी ठहर जाते हैं, किंतु अंतिम निर्णय अक्सर सबको चौंकाने वाला होता है। यही भाजपा की 'चमत्कार करने वाली' संगठनात्मक शैली है। नितिन नबीन का मनोनयन भी इसी परंपरा का हिस्सा है। यह निर्णय उन तमाम अटकलों पर विराम लगाने की क्षमता रखता है, जो लंबे समय से अध्यक्ष पद को लेकर पार्टी के भीतर चल रही थीं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भाजपा में पद नहीं, क्षमता निर्णायक होती है।

नितिन नबीन भारतीय राजनीति की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसने संगठनात्मक निष्ठा, वैचारिक स्पष्टता और सतत जनसंपर्क को अपनी राजनीतिक पहचान बनाया है। छात्र राजनीति से लेकर सक्रिय सार्वजनिक जीवन तक उनका सफ़र अनुशासन, कर्मठता, राष्ट्रीयता और संघर्ष की पाठशाला रहा है। वे जमीनी कार्यकर्ताओं से सीधा संवाद स्थापित करने वाले, जनता की समस्याओं को संवेदनशीलता से समझने वाले और उन्हें प्रशासनिक व राजनीतिक मंचों तक प्रभावी ढंग से पहुँचाने वाले नेता के रूप में पहचाने जाते हैं। नितिन नबीन की कार्यशैली में युवाओं के प्रति विश्वास, विकासोन्मुख सोच और पारदर्शिता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

अभियान

हिमालय की पुकार और बाबा केदार का आह्वान: 2026 में फिर खुलेगा मोक्ष का द्वार

हिमालय की अचल, मौन और तपस्वी पर्वतमालाओं के बीच स्थित केदारनाथ धाम केवल एक तीर्थ नहीं, बल्कि सनातन चेतना का वह केंद्र है, जहां पहुंचकर मनुष्य स्वयं को ईश्वर के सबसे निकट अनुभव करता है। यहां की हर शिला, हर वायु कण और हर मौन क्षण में भगवान शिव की उपस्थिति का आभास होता है। यही कारण है कि केदारनाथ को द्वादश ज्योतिर्लिंगों में विशेष स्थान प्राप्त है और चारधाम यात्रा का यह पड़ाव जीवन की सबसे कठिन, लेकिन सबसे पवित्र यात्राओं में गिना जाता है।

जब शीत ऋतु अपने चरम पर होती है और हिमालय की चोटियां बर्फ से ढक जाती हैं, तब केदारनाथ धाम भक्तों की आंखों से ओझल हो जाता है। भारी हिमपात के कारण मंदिर के कपाट विधि-विधान के साथ बंद कर दिए जाते हैं। उस क्षण पूरा धाम भावुक हो उठता है, मानो स्वयं प्रकृति भी बाबा केदार से विदा ले रही हो। इसके बाद भगवान केदारनाथ की पंचमुखी चल विग्रह डोली को भक्ति, मंत्र और आस्था के साथ उखीमठ स्थित ओंकारेश्वर मंदिर ले जाया जाता है, जहां पूरे शीतकाल बाबा की नियमित पूजा होती रहती है। यह परंपरा इस विश्वास को मजबूत करती है कि भगवान भक्तों से कभी दूर नहीं जाते, केवल रूप बदलते हैं।

बसंत ऋतु के आगमन के साथ ही जब बर्फ धीरे-धीरे पिघलने लगती है और हिमालय की वादियों में हरियाली झांकने लगती है, तब भक्तों के मन में बाबा केदार के दर्शन की तड़प भी जाग उठती है। केदारनाथ मंदिर के कपाट खुलने की तिथि कोई साधारण तिथि नहीं होती। यह वैदिक पंचांग, शास्त्रीय गणना और सदियों पुरानी धार्मिक परंपराओं के आधार पर तय की जाती है। महाशिवरात्रि के पावन दिन उखीमठ स्थित ओंकारेश्वर मंदिर में विशेष पूजा के पश्चात यह घोषणा होती है कि बाबा केदार कब अपने भक्तों को दर्शन देंगे। सनातन मान्यताओं के अनुसार अक्षय तृतीया का दिन अत्यंत शुभ और पुण्यदायी माना गया है। कहा जाता है कि इस दिन किए गए जप, तप और दान कभी नष्ट नहीं होते। इसी कारण केदारनाथ धाम के कपाट भी अक्षय तृतीया को खोले जाते हैं। हिंदू पंचांग के अनुसार वर्ष 2026 में अक्षय तृतीया 19 अप्रैल को पड़ रही है और धार्मिक परंपराओं के अनुसार इसी दिन बाबा केदार के कपाट खुलने की संभावना मानी जा रही है। यह वह क्षण होता है, जब वर्षों की प्रतीक्षा एक पल में समाप्त हो जाती है और धाम हर-हर महादेव के जयघोष से गूंज उठता है।

कपाट खुलते ही केदारनाथ धाम का वातावरण अलौकिक हो जाता है। शंखनाद, ढोल-नगाड़ों की ध्वनि और वैदिक मंत्रोच्चार के बीच जब मंदिर के द्वार खुलते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वयं कैलाश से महादेव अपने भक्तों का स्वागत करने आए हों। भक्तों की आंखों में आंसू, हाथों में फूल और हृदय में अपार श्रद्धा होती है। यह केवल दर्शन नहीं, बल्कि आत्मा के शुद्धिकरण का क्षण माना जाता है।

कपाट खुलने के बाद प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल बाबा केदार की आराधना होती है। ब्रह्म मुहूर्त में होने वाली प्रातः आरती में भगवान शिव का अभिषेक, श्रृंगार और भोग किया जाता है। मान्यता है कि इस आरती में सम्मिलित होने से जीवन के सभी भय, रोग और कष्ट दूर होते हैं। सायंकाल जब दीपों की पंक्तियां जलती हैं और मंत्रों की गूंज हिमालय में फैलती है, तब संपूर्ण धाम शिवमय हो उठता है। श्रद्धालु लंबी कतारों में खड़े होकर धैर्य और भक्ति के साथ बाबा के दर्शन करते हैं।

केदारनाथ यात्रा को केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं, बल्कि आत्मा की साधना कहा गया है। ऊंचे पर्वत, दुर्गम रास्ते और बदलता मौसम श्रद्धालु की श्रद्धा की परीक्षा लेते हैं। यहां पहुंचने के लिए केवल शरीर की नहीं, बल्कि मन और आत्मा की भी तैयारी आवश्यक होती है। सच्ची श्रद्धा, संयम और सेवा भाव के साथ जो भक्त बाबा के धाम की ओर बढ़ता है, वह स्वयं को जीवन के नए अर्थ से जुड़ा हुआ पाता है।

ऐसी मान्यता है कि केदारनाथ धाम में सच्चे हृदय से किए गए दर्शन से जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। वर्ष 2026 में कपाट खुलने के साथ ही एक बार फिर यह दिव्य धाम हिमालय की गोद में श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करेगा। वहां हर कदम पर आस्था की गूंज होगी, हर श्वास में शिव का नाम होगा और हर हृदय बाबा केदार की करुणा से भर उठेगा।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

GOAT इंडिया टूर का खास पड़ाव: वंतारा में मेस्सी की मेहमाननवाजी, अनंत अंबानी की मेजबानी में यादगार बनेगा जामनगर दौरा

(जीएनएस)। अर्जेंटीना के महान फुटबॉलर और विश्व कप विजेता लियोनेल मेस्सी का GOAT इंडिया टूर देश में फुटबॉल प्रेमियों के लिए किसी सपने से कम नहीं रहा है। कोलकाता, हैदराबाद, मुंबई और दिल्ली के बाद अब इस ऐतिहासिक दौरे का एक बेहद खास अध्याय जामनगर में जुड़ने जा रहा है, जहां मेस्सी अपने इंटर मियामी एफसी के साथी लुइस सुआरेज, रोड्रिगो डी पॉल और अन्य खिलाड़ियों के साथ वन्यजीव बचाव एवं संरक्षण केंद्र वंतारा का दौरा करेंगे। इस पूरे कार्यक्रम की मेजबानी रिलायंस समूह के अनंत अंबानी करेंगे और मेस्सी व उनके साथियों का वंतारा में एक रात का प्रवास तय किया गया है, जिसे इस दौरे का सबसे शांत, खास और भावनात्मक पड़ाव माना जा रहा है।

नई दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम के बाद मेस्सी, सुआरेज, डी पॉल और GOAT इंडिया टूर के अन्य सदस्य जामनगर के लिए रवाना हुए। दिल्ली में हुए इस आयोजन ने फुटबॉल और क्रिकेट के बीच एक खूबसूरत संगम रचा। यहां मेस्सी और उनके साथियों ने दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और आईसीसी अध्यक्ष जय शाह से मुलाकात की। इस दौरान जय शाह ने लियोनेल मेस्सी, लुइस सुआरेज और रोड्रिगो डी पॉल को भारतीय क्रिकेट टीम की जर्सी भेंट की, जो भारत के दो सबसे लोकप्रिय खेलों के आपसी सम्मान और सांस्कृतिक जुड़ाव का प्रतीक बन गई। मेस्सी को जर्सी नंबर 10, सुआरेज को नंबर 9 और डी पॉल को नंबर 7 दी गई, जिन पर उनके नाम भी अंकित थे। जय शाह और मेस्सी के बीच हुई सौहार्दपूर्ण बातचीत ने इस मुलाकात को और खास बना दिया। आईसीसी अध्यक्ष ने मेस्सी को अपने हस्ताक्षरित एक विशेष क्रिकेट बैट भी भेंट की, जिसने इस पल को फुटबॉल और क्रिकेट की विरासत का एक अनोखा संगम बना दिया। इतना ही नहीं, मेस्सी को आगामी टी20 विश्व कप के लिए औपचारिक रूप से आमंत्रित किया गया और उन्हें टूर्नामेंट के टिकट भी भेंट किए गए। मेस्सी को भारत बनाम अमेरिका मैच के टिकट दिए गए, क्योंकि वह अपने क्लब इंटर मियामी की प्रतिबद्धताओं के चलते अमेरिका में अधिक समय बिताते हैं।

अरुण जेटली स्टेडियम में जैसे ही मेस्सी, सुआरेज और डी पॉल ने कदम रखा, दर्शकों ने तालियों और नारों से उनका जोरदार स्वागत किया। मेस्सी एक बार फिर अपने चिर-परिचित अंदाज में युवाओं के साथ फुटबॉल खेलने में मग्न नजर आए। उन्होंने और उनके साथियों ने बारी-बारी से दर्शकों की ओर फुटबॉल उछाली और हर किक पर स्टेडियम तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। यह नजारा उन हजारों प्रशंसकों के लिए यादगार बन गया, जो सालों से मेस्सी को सिर्फ टीवी स्क्रीन पर देखते आए थे।

इससे पहले मेस्सी का कोलकाता दौरा भी चर्चा में रहा, जहां सॉल्ट लेक स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम में भारी भीड़ उमड़ी थी। हालांकि, वहां कुछ अव्यवस्थाओं के चलते अफरा-तफरी की स्थिति भी बनी और महंगे टिकट लेकर आए कुछ प्रशंसकों में नाराजगी देखी गई। इसके बावजूद यह बात साफ रही कि मेस्सी की लोकप्रियता खासकर पश्चिम बंगाल में किसी उत्सव से कम नहीं है। लोग सिर्फ उनकी एक झलक पाने के लिए घंटों इंतजार करते नजर आए, जो भारत में उनके जबरदस्त फैन बेस को दर्शाता है।

हैदराबाद में मेस्सी का दौरा पूरी तरह उत्साह और सकारात्मक माहौल से भरा रहा। उन्होंने मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के साथ 7-ऑन-7 प्रदर्शनी फुटबॉल मैच में हिस्सा लिया और दर्शकों से भरपूर प्यार पाया। इसी दौरान उन्होंने लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी से भी मुलाकात की, जिसने इस दौरे को राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर भी खास बना दिया। मुंबई में वानखेड़े स्टेडियम का माहौल भी किसी बड़े फाइनल मैच जैसा रहा, जहां क्रिकेट और फुटबॉल के प्रशंसक एक साथ मेस्सी को देखने पहुंचे। कार्यक्रम की शुरुआत मशहूर डीजे चेतन के संगीत और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ हुई, जिसने पूरे माहौल को उत्सव में बदल दिया।

वानखेड़े में इंडियन स्टार्स और मित्रा स्टार्स के बीच एक दोस्ताना फुटबॉल मैच खेला गया, जिसमें टाइगर श्रॉफ, जिम सरभ, बाला देवी जैसे सितारे नजर आए, वहीं दूसरी ओर भारतीय फुटबॉल के दिग्गज सुनील छेत्री अपने बेंगलुरु एफसी साथियों के साथ मैदान में उतरे। मेस्सी ने छेत्री के साथ खास पल साझा किए और उन्हें अर्जेंटीना की हस्ताक्षरित जर्सी भेंट की। उन्होंने स्टैंड की ओर फुटबॉल उछालकर दर्शकों को भी खूब खुश किया।

कार्यक्रम का सबसे भावुक और ऐतिहासिक क्षण तब आया, जब क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर ने मेस्सी को भारतीय क्रिकेट टीम की जर्सी भेंट की। इसके बाद सचिन तेंदुलकर, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, मेस्सी और उनके साथियों की साथ में ली गई तस्वीरें लंबे समय तक याद रखी जाएंगी। अब जब मेस्सी जामनगर के वंतारा पहुंचने वाले हैं, तो यह दौरा सिर्फ खेल तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वन्यजीव संरक्षण और प्रकृति के प्रति जागरूकता का संदेश भी देगा। अनंत अंबानी की मेजबानी में होने वाला यह प्रवास GOAT इंडिया टूर को एक अलग ही ऊंचाई पर ले जाने वाला है और भारत में मेस्सी की यह यात्रा हमेशा के लिए यादगार बनकर दर्ज हो गई है।

श्री भूपेंद्र पटेल के दिशा-निर्देशन में 'सीएम डैशबोर्ड' के माध्यम से गवर्नेंस परफॉर्मेंस इंडेक्स (जीपीआई) की पहल

मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में विभिन्न विभागों के जीपीआई की समीक्षा बैठक

(जीएनएस)। गांधीनगर : सरकार के विभिन्न विभाग राज्य के नागरिकों के ईज ऑफ लिविंग को बढ़ाने के साथ योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन नागरिक केंद्रित योजनाओं, सेवाओं, विकासोन्मुखी कार्यों, इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट तथा शिकायत निवारण के कामकाज से करते हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के दिशादर्शन में इस उद्देश्य से विभिन्न विभागों के अलग अलग प्रकार के कामकाज के महत्वपूर्ण पैरामीटर्स को 'सीएम डैशबोर्ड' पर एक ही इंटीग्रेटेड प्लेटफॉर्म पर लाया गया है।

देश में सुशासन के रोल मॉडल के रूप में स्थापित गुजरात में सिटीजन सेंट्रिक गवर्नेंस का दृष्टिकोण सुनिश्चित हो तथा योजनाओं के क्रियान्वयन सहित विभिन्न विषयों की रियल टाइम मॉनिटरिंग हो, इस उद्देश्य से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में यह 'सीएम डैशबोर्ड' कार्यरत किया गया है।

टेक्नोलॉजी के समुचित उपयोग की पहलरूपी में यह 'सीएम डैशबोर्ड' देश के अन्य राज्यों के लिए जन हितोन्मुखी व योजनागत कार्यों के मूल्यांकन तथा क्रियान्वयन के लिए एक उदाहरणरूपी प्लेटफॉर्म बना है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुड गवर्नेंस की इस उज्ज्वल परंपरा को गतिपूर्वक आगे बढ़ाते हुए 'सीएम डैशबोर्ड' के माध्यम से समग्रोन्मुखी गवर्नेंस परफॉर्मेंस इंडेक्स (जीपीआई) तैयार करवाया है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस जीपीआई के संदर्भ में गांधीनगर में विभागों की कार्य प्रगति की उच्च स्तरीय समीक्षा कर आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया।

इस समीक्षा बैठक में मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, मुख्यमंत्री श्री के मुख्य सलाहकार डॉ. हसमुख अढिया, मुख्यमंत्री के सलाहकार श्री एस. एस. राठौड, सरदार सरोवर नर्मदा निगम के अध्यक्ष श्री मुकेश पुरी, कृषि, ऊर्जा, नर्मदा जल संसाधन विभागों के अपर मुख्य सचिव, आदिजाति, श्रम एवं रोजगार विभाग के प्रधान सचिव तथा मुख्यमंत्री की अपर प्रधान सचिव श्रीमती अवंतिका सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, सड़क एवं भवन विभाग के सचिव श्री प्रभात पटेलिया तथा अन्य संबंधित विभागों के सचिव भी सहभागी हुए।

भावनगर रेलवे मंडल पर आयोजित 68वीं पेंशन अदालत में पेंशन संबंधी 225 मामलों का हुआ निपटारा

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के भावनगर रेलवे मंडल पर दिनांक 15 दिसंबर, 2025 (सोमवार) को मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा की अध्यक्षता में "68वीं पेंशन अदालत" का सफल आयोजन किया गया। इस पेंशन अदालत में मंडल से सेवानिवृत्त कर्मचारियों की पेंशन से संबंधित विभिन्न समस्याओं का समाधान किया गया। पेंशन भुगतान आदेश (PPO), फिक्स्ड मेडिकल एलाउन्स, ग्रुप इंश्योरेंस सहित पेंशन से जुड़े ब्रॉडगेज वर्कशॉप के 8 मामले और मंडल कार्यालय के 217 मामलों सहित कुल 225 मामलों का तत्परता एवं संतोषजनक ढंग से निपटारा किया गया। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि पेंशन अदालत को सफल बनाने में कार्मिक विभाग, वित्त विभाग, निपटारा शाखा एवं वेलफेयर इंस्पेक्टर्स की टीम की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिनके समन्वित प्रयासों से सभी मामलों का समयबद्ध निस्तारण संभव हो सका। पेंशन से संबंधित मामलों के शीघ्र समाधान एवं त्वरित कार्यवाही के लिए "ऑल इंडिया रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन" तथा "अखिल भारतीय रेलवे पेंशनर्स कल्याण महासंघ (All India Railway Pensioners Welfare Federation)" द्वारा प्रशासन के प्रयासों की सराहना करते हुए आभार व्यक्त किया गया।

इस अवसर पर श्री हिमाँशु शर्मा (अपर मंडल रेल प्रबंधक), श्री हुबलाल जगन (वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी), श्री मोहित पांचाल (वरिष्ठ मंडल वित्त प्रबंधक), श्री वाई. राधेश्याम (सहायक कार्मिक अधिकारी), श्री संतोष कुमार वर्मा (सहायक कार्मिक अधिकारी), श्री वीरेंद्र प्रताप सिंह (वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी – ब्रॉडगेज वर्कशॉप) एवं श्री संजय सक्सेना (सहायक मंडल वित्त प्रबंधक) सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

बांद्रा टर्मिनस–दिल्ली सराय रोहिल्ला सुपरफास्ट एक्सप्रेस का कलोल स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा के लिए ट्रेन संख्या 12216/12215 बांद्रा टर्मिनस–दिल्ली सराय रोहिल्ला सुपरफास्ट एक्सप्रेस को कलोल स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव प्रदान किया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस ट्रेन का विवरण निम्नानुसार हैः

16 दिसम्बर, 2025 को बांद्रा टर्मिनस से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12216 बांद्रा टर्मिनस – दिल्ली सराय रोहिल्ला सुपरफास्ट एक्सप्रेस कलोल स्टेशन पर रुकेगी। यह ट्रेन कलोल स्टेशन पर 20:11 बजे पहुँचेगी तथा 20:13 बजे प्रस्थान करेगी।

इसी प्रकार, 16 दिसम्बर, 2025 को दिल्ली सराय रोहिल्ला से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12215 दिल्ली सराय रोहिल्ला - बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट एक्सप्रेस कलोल स्टेशन पर रुकेगी। यह ट्रेन कलोल स्टेशन पर 22:41 बजे पहुँचेगी तथा 22:43 बजे प्रस्थान करेगी।

ट्रेनों के समय, ठहराव एवं संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा उभरती प्रतिभाओं का सम्मान एवं स्वच्छता सशक्तिकरण पहल का शुभारंभ

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO) द्वारा मुंबई स्थित पश्चिम रेलवे मुख्यालय में निबंध, चित्रकला एवं पेंटिंग प्रतियोगिताओं के विजेताओं के लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसी अवसर पर "स्वच्छता से सशक्तिकरण की शुरुआत" शीर्षक से एक सामाजिक कल्याण पहल का भी शुभारंभ किया गया।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, निबंध, चित्रकला एवं पेंटिंग तथा अंतर-मंडलीय चित्रकला एवं पेंटिंग प्रतियोगिता की तीन श्रेणियों में कुल 37 बाल विजेताओं को

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती नीता गुप्ता द्वारा नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की कार्यकारिणी समिति के सदस्य भी उपस्थित रहे। श्रीमती नीता गुप्ता ने सभा को संबोधित करते हुए बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार शौक अपनाने के लिए प्रेरित किया तथा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा के साथ-साथ सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भागीदारी के महत्व पर बल दिया। उन्होंने प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों की रचनात्मकता एवं प्रदर्शन की सराहना की। इसी कार्यक्रम के दौरान "स्वच्छता से सशक्तिकरण की शुरुआत" परियोजना का भी शुभारंभ किया गया। इस पहल के अंतर्गत आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की महिलाओं को सैनिटरी नैपकिन वितरित किए जाएंगे, जिससे स्वास्थ्य, स्वच्छता के प्रति जागरूकता एवं गरिमा को बढ़ावा दिया जा सके। इस पहल के तहत पश्चिम रेलवे मुख्यालय कार्यालय में कार्यरत कॉन्ट्रैक्ट पर नियुक्त महिला कर्मचारियों को श्रीमती नीता गुप्ता द्वारा सैनिटरी नैपकिन, तौलिया एवं साबुन सहित स्वच्छता किट प्रदान की गई, जिससे महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कल्याण के प्रति पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की प्रतिबद्धता को सुदृढ़ किया गया।

पश्चिम रेलवे, पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन के माध्यम से उभरती प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने तथा समाज के कल्याण हेतु समावेशी सामाजिक पहलों को निरंतर समर्थन करती रही है।

वडोदरा मंडल द्वारा ऊर्जा संरक्षण सप्ताह मनाया गया, लोगों को ऊर्जा संरक्षण के लिए किया गया जागरूक

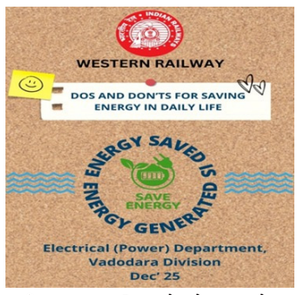

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे का वडोदरा मंडल ऊर्जा संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसी क्रम में, वडोदरा मंडल द्वारा 08 दिसंबर से 14 दिसंबर, 2025 तक ऊर्जा संरक्षण सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसमें मंडल के सभी रेल कर्मचारी एवं अधिकारीगणों ने सक्रिय सहभागिता निभाई। इस अवसर पर ऊर्जा संरक्षण के महत्व को रेलकर्मियों एवं जन-जन तक पहुँचाने हेतु विभिन्न जागरूकता गतिविधियाँ संचालित की गईं।

वडोदरा मंडल के जनसम्पर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ऊर्जा संरक्षण सप्ताह मनाते हुए मंडल के सभी रेलवे स्टेशनों पर लोगों को जागरूक करने के लिए ऊर्जा संरक्षण से संबंधित पोस्टर लगाए गए। मंडल मुख्यालय में ऊर्जा संरक्षण एवं ऊर्जा दक्षता पर एक सेमिनार का आयोजन भी किया गया, जिसमें वडोदरा मंडल के अधिकारीगण सम्मिलित होकर लाभान्वित हुए। इसके अतिरिक्त, रेलवे द्वारा आवंटित मोबाइल सिम कार्डों पर ऊर्जा संरक्षण आधारित कॉलर ट्यून (रिंगटोन) के माध्यम से रेलकर्मियों में जागरूकता फैलाने का सफल प्रयास किया गया।

श्री सक्सेना ने बताया कि ऊर्जा संरक्षण सप्ताह के अंतर्गत इसके अतिरिक्त, ऊर्जा संरक्षण एवं ऊर्जा दक्षता से संबंधित "क्या करें / क्या न करें" विषयक सुझावों के साथ एक संक्षिप्त पत्रिका प्रकाशित कर रेल कर्मचारी एवं अधिकारीगणों के बीच जागरूकता हेतु वितरित की गई।

वडोदरा मंडल ऊर्जा संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के साथ भविष्य में भी ऐसे सतत एवं प्रभावी उपाय अपनाता रहेगा।

पश्चिम रेलवे द्वारा मानव तस्करी विरोधी,क्षमता निर्माण कार्यशाला का आयोजन

महिलाओं एवं बच्चों की सुरक्षा हेतु इंटर-एजेंसी कोऑर्डिनेशन को सुदृढ़ करने पर विशेष जोर

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा 15 दिसंबर, 2025 को मानव तस्करी विरोधी विषय पर एक क्षमता निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला महिलाओं एवं बच्चों की सुरक्षा, बचाव, पुनर्वास तथा उन्हें उनके परिवारों से पुनर्मिलन सुनिश्चित करने पर केंद्रित थी। यह पहल रेलवे परिसरों को अधिक सुरक्षित, संवेदनशील एवं मानवीय बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस क्षमता निर्माण कार्यशाला का आयोजन रेलवे सुरक्षा बल (RPF), पश्चिम रेलवे द्वारा राष्ट्रीय महिला आयोग (NCW) के सहयोग से संयुक्त रूप से किया गया। इस कार्यशाला में राष्ट्रीय महिला आयोग, नई दिल्ली की अध्यक्षा श्रीमती विजया किशोर रहाटकर; पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता; मुंबई पुलिस की उपायुक्त श्रीमती रागसुधा आर. (IPS); वरिष्ठ सलाहकार श्रीमती निशिता दुबे; रेलवे सुरक्षा बल के महानिरीक्षक-सह-प्रमुख मुख्य सुरक्षा आयुक्त श्री अजय सदानी; पश्चिम रेलवे, मुंबई सेंट्रल मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री पंकज सिंह सहित पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी तथा विशिष्ट संसाधन व्यक्ति उपस्थित थे।

कार्यशाला का उद्देश्य रेलवे स्टेशनों एवं ट्रेनों जैसे संवेदनशील स्थानों पर मानव तस्करी की रोकथाम के प्रति जागरूकता बढ़ाना, विभिन्न एजेंसियों के बीच समन्वय को सुदृढ़ करना तथा त्वरित एवं संवेदनशील प्रतिक्रिया तंत्र विकसित करना था। कार्यशाला में दो तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। सत्र-1 का विषय "मानव तस्करी के आयाम, कानून एवं प्रवर्तन एजेंसियों की भूमिका" था, जबकि सत्र-2 "मानव तस्करी नेटवर्क को बाधित करने हेतु इंटर-सेक्टोरल कन्वर्जेंस को सुदृढ़ करना" विषय पर केंद्रित था। दोनों सत्रों के उपरांत संबंधित विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई।

राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा श्रीमती विजया किशोर रहाटकर ने अपने संबोधन में रेलवे परिसरों में मानव तस्करी की रोकथाम एवं महिलाओं की सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु पश्चिम रेलवे द्वारा किए जा रहे सतत प्रयासों की सराहना की। उन्होंने भारतीय रेल, जिसमें पश्चिम रेलवे भी शामिल है, की "मेरी सहेली" पहल की विशेष रूप से प्रशंसा की। यह एक समर्पित सुरक्षा कार्यक्रम है, जिसके अंतर्गत महिला रेलवे सुरक्षा बल (RPF) टीमें अकेली यात्रा कर रही महिला यात्रियों को सुरक्षा, मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान करती हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की पहलें महिला यात्रियों में विश्वास एवं आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं तथा रेल यात्रा को अधिक सुरक्षित, समावेशी एवं महिला-अनुकूल बनाती हैं।

श्रीमती रहाटकर ने आगे रेलवे स्टेशनों पर कार्यरत सहायकों (कुलियों), हाउसकीपिंग स्टाफ एवं अन्य फ्रंटलाइन ग्राउंड स्टाफ के नियमित प्रशिक्षण एवं संवेदनशीलता बढ़ाने की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि चौबीसों घंटे कार्यरत ये कर्मचारी प्रायः यात्रियों के प्रथम संपर्क बिंदु होते हैं और खोए हुए, घर से भागे हुए अथवा सहायता की आवश्यकता वाले बच्चों, विशेषकर बालिकाओं की शीघ्र पहचान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, जिससे स्टेशनों पर सुरक्षा एवं प्रतिक्रिया तंत्र और अधिक मजबूत हो सकता है।

सभा को संबोधित करते हुए पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने कहा कि रेलवे केवल परिवहन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज से सीधे जुड़ा एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक तंत्र है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि महिलाओं एवं बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना रेलवे की सामाजिक जिम्मेदारी का अभिन्न अंग है, जिसके लिए सतर्कता, संवेदनशीलता तथा सशक्त मल्टी-एजेंसी कोऑर्डिनेशन आवश्यक है।

कार्यशाला के दौरान पश्चिम रेलवे द्वारा "नन्हे फरिश्ते" एवं "ऑपरेशन डिग्निटी" अभियानों के अंतर्गत किए गए प्रयासों की जानकारी भी साझा की गई। पिछले दो वर्षों में कुल 1,573 बच्चों—जिसमें वर्ष 2024 के दौरान 842 बच्चे तथा वर्ष 2025 (अब तक) 731 बच्चे शामिल हैं—को असुरक्षित परिस्थितियों से बचाकर पुनर्वासित किया गया तथा उनके परिवारों से पुनर्मिलन सुनिश्चित किया गया है। इसके अतिरिक्त, चाइल्ड हेल्प डेस्क स्थापित किए गए हैं, जिनका संचालन संबंधित राज्य सरकारों एवं जिला बाल संरक्षण अधिकारियों के सहयोग से प्रभावी रूप से किया जा रहा है। पश्चिम रेलवे, रेलवे सुरक्षा बल एवं राष्ट्रीय महिला आयोग महिलाओं एवं बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने, मानव तस्करी की रोकथाम तथा मानवीय मूल्यों की रक्षा हेतु प्रशिक्षण, जागरूकता एवं इंटर-एजेंसी कोऑर्डिनेशन को और अधिक सुदृढ़ करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

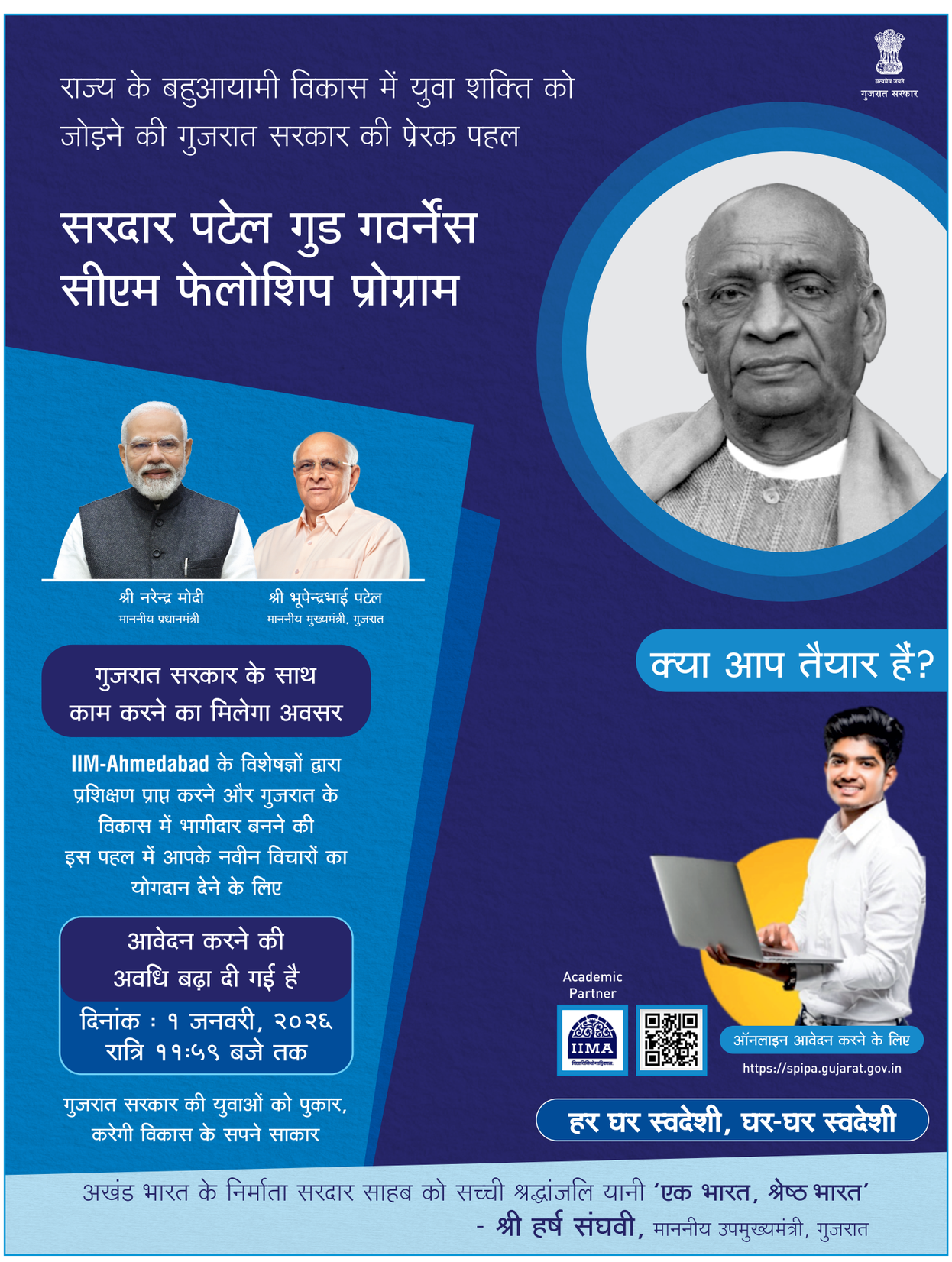

जहां हर घर में नहीं जलता चूल्हा, फिर भी कोई भूखा नहीं रहता, गुजरात का यह गांव बना सामूहिक जीवन की मिसाल

(जीएनएस)। सदियों से भारतीय गांव अपनी सादगी, सामूहिकता और परंपराओं के लिए पहचाने जाते रहे हैं। आधुनिक दौर में जब निजी सुविधाएं, व्यक्तिगत रसोई और एकल परिवारों का चलन बढ़ता जा रहा है, उसी समय गुजरात का एक छोटा सा गांव अपनी अनोखी परंपरा के कारण सबका ध्यान खींच रहा है। इस गांव का नाम चंदकी है, जहां लगभग एक हजार की आबादी रहती है, लेकिन हैरानी की बात यह है कि यहां किसी भी घर में किचन नहीं है। बावजूद इसके, गांव का कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं सोता। वजह है गांव की सामुदायिक रसोई, जो सिर्फ खाना पकाने की जगह नहीं, बल्कि एकता, बराबरी और आपसी सहयोग की जीवंत मिसाल बन चुकी है।

चंदकी गांव में रोज का भोजन एक ही स्थान पर तैयार होता है। सुबह से ही गांव के लोग बारी-बारी से सामुदायिक रसोई में जुट जाते हैं। कोई सब्जियां काटता है, कोई दाल संभालता है, तो कोई आटे से रोटियां बनाने में हाथ बंटाता है। खाना तैयार होने के बाद पूरा गांव एक साथ बैठकर भोजन करता है। अमीर-गरीब, बुजुर्ग-बच्चे, सभी एक पंक्ति में बैठते हैं और एक जैसा भोजन करते हैं। यहां किसी के लिए अलग थाली या विशेष व्यवस्था नहीं होती, जिससे बराबरी की भावना अपने आप मजबूत होती है।

गांव के बुजुर्ग बताते हैं कि इस परंपरा की शुरुआत कई साल पहले हुई थी। जैसे-जैसे समय बदला, गांव के युवा रोजगार और बेहतर भविष्य की तलाश में शहरों और विदेशों में बसने लगे। गांव में बुजुर्गों की संख्या बढ़ने लगी और हर घर में अलग-अलग खाना बनाना मुश्किल होता चला गया। ऐसे में गांव वालों ने मिलकर फैसला लिया कि क्यों न सबका खाना एक ही जगह बने और सभी साथ बैठकर खाएं। यही फैसला धीरे-धीरे परंपरा बन गया और आज यह चंदकी गांव की पहचान है।

इस सामुदायिक व्यवस्था को सुचारू रखने के लिए जिम्मेदारियां भी साझा की जाती हैं। करीब 100 गांव वाले रोज खाना बनाने की जिम्मेदारी आपस में बांटते हैं, ताकि किसी एक व्यक्ति या परिवार पर बोझ न पड़े। दाल, सब्जी और रोटी जैसे रोजमर्रा के भोजन के साथ-साथ त्योहारों और खास मौकों पर विशेष व्यंजन भी पूरे गांव के लिए तैयार किए जाते हैं। शादी, त्योहार या किसी खुशी के मौके पर यह सामुदायिक रसोई और भी जीवंत हो जाती है, जहां खुशी सिर्फ एक घर की नहीं, बल्कि पूरे गांव की होती है।

समय के साथ चंदकी गांव का यह सामुदायिक किचन पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन गया है। यहां आने वाले मेहमान न केवल सादा और स्वादिष्ट भोजन का आनंद लेते हैं, बल्कि गांव की संस्कृति, अपनापन और सामूहिक जीवनशैली को भी करीब से महसूस करते हैं। कई लोग मानते हैं कि यहां बैठकर खाना खाने से सिर्फ पेट नहीं भरता, बल्कि मन भी तृप्त हो जाता है, क्योंकि यह अनुभव आधुनिक जीवन में दुर्लभ होता जा रहा है।

चंदकी गांव के लोग गर्व से कहते हैं कि उनके यहां कोई अकेला नहीं है। सुख हो या दुख, हर स्थिति में पूरा गांव एक परिवार की तरह खड़ा रहता है। सामुदायिक रसोई ने लोगों के बीच दूरी मिटा दी है और आपसी भरोसे को मजबूत किया है। निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर सामूहिक सोच अपनाने की यह परंपरा आज के दौर में एक बड़ा संदेश देती है कि सुविधाओं से ज्यादा जरूरी है इंसान का इंसान के साथ जुड़ाव। गुजरात का यह छोटा सा गांव दिखाता है कि अगर सोच सामूहिक हो, तो बिना निजी रसोई के भी एक पूरा गांव खुशहाल और संतुष्ट रह सकता है।

स्वास्थ्य सेवाओं को मिली नई ताकत, बिहार में 1283 आयुष चिकित्सकों की नियुक्ति से हर जिले तक पहुंचेगा इलाज

(जीएनएस)। पटना। बिहार की स्वास्थ्य व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को 1283 नवनियुक्त आयुष चिकित्सकों को नियुक्ति पत्र सौंपे। मुख्यमंत्री सचिवालय स्थित 'संवाद' में आयोजित भव्य समारोह में उन्होंने प्रतीकात्मक रूप से 10 चिकित्सकों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए और सभी चयनित डॉक्टरों को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य है कि प्रदेश के हर नागरिक तक बेहतर, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचें, और आयुष चिकित्सकों की यह नियुक्ति उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इन नियुक्तियों के तहत राज्य को 685 आयुर्वेदिक, 393 होमियोपैथिक और 205 यूनानी चिकित्सक मिले हैं। चयनित चिकित्सकों की तैनाती अभ्यर्थियों की मेधा सूची, उनकी प्राथमिकता के जिले और उपलब्ध रिक्तियों को ध्यान में रखते हुए बिहार के सभी 38 जिलों में की गई है। सरकार का मानना है कि इससे न सिर्फ जिला स्तर पर, बल्कि प्रखंड और ग्रामीण क्षेत्रों में भी आयुष चिकित्सा सेवाओं को नई गति मिलेगी।

नवनियुक्त आयुष चिकित्सक राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत चलंत चिकित्सा दलों में अपनी सेवाएं देंगे और आयुष चिकित्सा सेवाओं के तहत ओपीडी संचालन के साथ-साथ राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन से जुड़े अन्य कार्यक्रमों में भी सक्रिय भूमिका निभाएंगे। खास तौर पर स्कूलों में बच्चों की नियमित स्वास्थ्य जांच, बीमारियों की समय पर पहचान और उचित उपचार में इन चिकित्सकों की भूमिका अहम होगी। इससे बच्चों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने के साथ-साथ गंभीर बीमारियों को शुरुआती चरण में ही नियंत्रित किया जा सकेगा।

सरकार का यह भी मानना है कि आयुष पद्धतियों के समावेश से स्वास्थ्य सेवाओं में विविधता आएगी और मरीजों को एलोपैथी के साथ-साथ आयुर्वेद, होमियोपैथी और यूनानी उपचार का विकल्प भी मिलेगा। इससे स्वास्थ्य संस्थानों पर बढ़ते दबाव को कम करने में मदद मिलेगी और आम लोगों को अपने नजदीकी स्वास्थ्य केंद्रों पर ही बेहतर इलाज उपलब्ध हो सकेगा।

इन राज्यों में शराब नहीं, कानून बोलता है सख्त भाषा, पीना तो दूर पास रखना भी बन सकता है बड़ी मुसीबत

(जीएनएस)। भारत में शराब को लेकर कानून एक समान नहीं हैं। जहां कई राज्यों में शराब की बिक्री और सेवन सामान्य सामाजिक जीवन का हिस्सा है, वहीं कुछ राज्यों में इसे पूरी तरह अपराध की श्रेणी में रखा गया है। इन राज्यों में हालात ऐसे हैं कि अगर कोई व्यक्ति शराब पीते हुए या सिर्फ अपने पास रखते हुए भी पकड़ा गया, तो उसे जेल, भारी जुर्माने और संपत्ति जब्ती जैसी सख्त कार्रवाई का सामना करना पड़ सकता है। यहां तक कि कई मामलों में घर सील हो सकता है और वाहन जब्त किया जा सकता है। ऐसे राज्यों की संख्या पांच है, जहां शराबबंदी बेहद कड़े कानूनों के तहत लागू है और यह कानून स्थानीय निवासियों के साथ-साथ पर्यटकों पर भी समान रूप से लागू होते हैं। बिहार उन राज्यों में सबसे सख्त कानूनों के लिए जाना जाता है, जहां शराब पर पूर्ण प्रतिबंध लागू है। बिहार निषेध एवं उत्पाद शुल्क अधिनियम, 2016 के तहत शराब का उत्पादन, बिक्री, खरीद, भंडारण और सेवन सभी अवैध हैं। यहां अगर कोई व्यक्ति शराब पीते हुए पकड़ा जाता है, तो उसे तीन महीने तक की जेल या पांच हजार रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। वहीं शराब रखने, बेचने या तस्करी के मामलों में सजा और भी कठोर है, जिसमें पांच से दस साल तक की कैद और एक लाख रुपये तक का

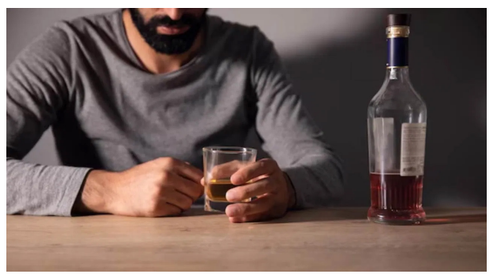

जुर्माना लगाया जा सकता है। बिहार में कानून की सख्ती का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अगर किसी घर या वाहन से शराब बरामद होती है, तो उस घर को सील किया जा सकता है और वाहन को जब्त कर लिया जाता है। कई मामलों में जमानत मिलना भी बेहद मुश्किल हो जाता है।

गुजरात भी शराबबंदी के लिए लंबे समय से जाना जाता है। यहां गुजरात निषेध अधिनियम के तहत दशकों से शराब पर प्रतिबंध लागू है। हालांकि सीमित चिकित्सा कारणों के लिए परमिट के आधार पर शराब की अनुमति दी जाती है, लेकिन बिना परमिट शराब पीना या अपने पास रखना अपराध माना जाता है। ऐसे मामलों में तीन साल तक की जेल और पांच हजार रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। शराब की अवैध बिक्री या तस्करी करने पर सजा और भी कड़ी है और दोषी को दस साल तक की जेल हो सकती है। गुजरात में दूसरे राज्यों से शराब लाना भी अपराध की श्रेणी में आता है, चाहे वह निजी उपयोग के लिए ही क्यों न हो।

पूर्वोत्तर भारत में स्थित नागालैंड में भी शराब पर पूर्ण प्रतिबंध है। नागालैंड शराब निषेध अधिनियम, 1989 के तहत शराब बनाना, बेचना, लाना, रखना या सेवन करना दंडनीय अपराध है। इस कानून का उल्लंघन करने पर आरोपी को जेल, जुर्माना या दोनों की सजा दी जा सकती है। अगर कोई व्यक्ति बार-बार इस अपराध में पकड़ा जाता है, तो उसके खिलाफ और भी सख्त कार्रवाई का प्रावधान है। अवैध शराब को तुरंत जब्त कर लिया जाता है और संबंधित व्यक्ति पर आपराधिक मामला दर्ज किया जाता है।

मिजोरम में भी शराब को लेकर कानून बेहद सख्त हैं। मिजोरम शराब निषेध अधिनियम, 2019 के तहत शराब का उत्पादन, बिक्री और नियमित सेवन पूरी तरह प्रतिबंधित है। हालांकि कुछ धार्मिक और पारंपरिक कार्यक्रमों में सीमित छूट दी गई है, लेकिन सामान्य तौर पर शराब पीने या बेचने वालों को छह महीने से तीन साल तक की जेल और जुर्माना हो सकता है। यहां भी बाहर से शराब लाना कानूनन अपराध माना जाता है और पकड़े जाने पर सख्त कार्रवाई की जाती है।

लक्षद्वीप में शराब को लेकर विशेष नियम लागू हैं। लक्षद्वीप निषेध विनियमन, 1979 के तहत केवल कुछ चुनिंदा द्वीपों और सीमित श्रेणी के पर्यटकों को ही परमिट के आधार पर शराब की अनुमति दी जाती है। बिना अनुमति शराब बेचना, रखना या पीना अपराध है, जिस पर जेल और जुर्माना दोनों हो सकते हैं। कई मामलों में पर्यटकों का परमिट रद्द कर उन्हें द्वीप से बाहर भेज दिया जाता है, जिससे उनकी यात्रा बीच में ही खत्म हो सकती है।

इन सभी राज्यों में शराब से जुड़े कानून इतने कड़े हैं कि होटल, घर या वाहन में शराब मिलने पर सीधे मामला दर्ज किया जा सकता है। प्रतिबंधित राज्यों में दूसरे राज्य से शराब लाना भी अपराध है और यह कानून स्थानीय लोगों और पर्यटकों दोनों पर समान रूप से लागू होता है। ऐसे में इन राज्यों की यात्रा करने या वहां रहने से पहले शराब संबंधी कानूनों की पूरी जानकारी होना बेहद जरूरी है, क्योंकि एक छोटी सी लापरवाही किसी को लंबी कानूनी प्रक्रिया, जेल और आर्थिक नुकसान में डाल सकती है।

अनिल अंबानी समूह से जुड़े 5,010 करोड़ के निवेश की परतें खुलीं, ईडी के सामने पेश हुए यस बैंक के पूर्व सीईओ राणा कपूर

(जीएनएस)। नई दिल्ली। रिलायंस अनिल अंबानी समूह की कंपनियों से जुड़े कथित मनी लॉन्ड्रिंग और संदिग्ध वित्तीय लेनदेन के मामले में जांच अब निर्णायक मोड़ पर पहुंचती नजर आ रही है। सोमवार को यस बैंक के सह-संस्थापक और पूर्व मुख्य कार्यपालक अधिकारी राणा कपूर प्रवर्तन निदेशालय के मुख्यालय पहुंचे, जहां उनसे घंटों तक गहन पूछताछ की गई। इस दौरान उनके बयान धनशोधन निवारण अधिनियम, 2002 के तहत दर्ज किए गए। जांच एजेंसी का फोकस उस समयावधि पर है, जब राणा कपूर के नेतृत्व में यस बैंक ने अनिल अंबानी समूह की विभिन्न कंपनियों में बड़े पैमाने पर निवेश किए थे। ईडी सूत्रों के अनुसार, यह मामला वर्ष 2017 से 2019 के बीच का है, जब यस बैंक ने रिलायंस होम फाइनेंस लिमिटेड और रिलायंस कमर्शियल फाइनेंस लिमिटेड में हजारों करोड़ रुपये का निवेश किया। एजेंसी का कहना है कि रिलायंस होम फाइनेंस में करीब 2,965 करोड़ रुपये और रिलायंस कमर्शियल फाइनेंस में लगभग 2,045 करोड़ रुपये लगाए गए थे। कुल मिलाकर यह राशि करीब 5,010 करोड़ रुपये बैठती है। जांच में सामने आया है कि दिसंबर 2019 तक ये निवेश नॉन-परफॉर्मिंग इन्वेस्टमेंट में बदल गए, जिससे बैंक को भारी वित्तीय नुकसान उठाना पड़ा।

प्रवर्तन निदेशालय यह जानने की कोशिश कर रहा है कि इन निवेशों को मंजूरी देते समय बैंक की आंतरिक प्रक्रियाओं का पालन किया गया था या नहीं। पूछताछ के दौरान राणा कपूर से यह भी सवाल किए गए कि इन कंपनियों की वित्तीय स्थिति का आकलन कैसे किया गया, जोखिम प्रबंधन के मानक क्या थे और क्या बोर्ड स्तर पर इन फैसलों पर पर्याप्त चर्चा हुई थी। ईडी यह भी जांच कर रही है कि क्या इन निवेशों के बदले किसी तरह के अनुचित लाभ, कमीशन या संदिग्ध लेनदेन हुए, जो मनी लॉन्ड्रिंग के दायरे में आ सकते हैं।

यह मामला इसलिए भी अहम माना जा रहा है क्योंकि यस बैंक और अनिल अंबानी समूह दोनों ही पिछले कुछ वर्षों से गंभीर वित्तीय संकट और जांच के दौर से गुजर रहे हैं। यस बैंक को जहां कमजोर वित्तीय स्थिति के चलते पुनर्गठन की प्रक्रिया से गुजरना पड़ा, वहीं अनिल अंबानी समूह की कई कंपनियां कर्ज के बोझ तले दबकर दिवालिया प्रक्रिया में चली गईं। ऐसे में ईडी की यह कार्रवाई न केवल इन निवेशों की सच्चाई सामने लाने की कोशिश है, बल्कि देश के बैंकिंग और कॉरपोरेट सेक्टर में जवाबदेही तय करने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। जांच एजेंसी का कहना है कि दस्तावेजों और अन्य साक्ष्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी और जरूरत पड़ने पर अन्य संबंधित लोगों से भी पूछताछ की जा सकती है।

सोना वायदा नए सुनहरे शिखर पर पहुँचा: चांदी वायदा में 5280 रुपये का ऊछाल: क्रूड ऑयल वायदा 15 रुपये फिसला

कमोडिटी वायदाओं में 33744.32 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 139977.29 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर: सोना-चांदी के वायदाओं में 29083.35 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार: बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 32905 पॉइंट के स्तर पर

(जीएनएस)। मुंबई: देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 173728.49 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 33744.32 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 139977.29 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का दिसंबर वायदा 32905 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 2042.62 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 29083.35 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा 134204 रुपये पर खुलकर, ऊपर में 135496 रुपये के ऑल टाइम हाई स्तर पर और नीचे में 134204 रुपये पर पहुंचकर, 133622 रुपये के पिछले बंद के सामने 1548 रुपये या 1.16 फीसदी की तेजी के संग 135170 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-गिनी दिसंबर वायदा 1339 रुपये या 1.26 फीसदी की तेजी के संग 107771 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल दिसंबर वायदा 174 रुपये या 1.31 फीसदी की तेजी के संग 13499 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी जनवरी वायदा सत्र के आरंभ में 131500 रुपये के भाव पर खूलकर, 133590 रुपये के दिन के उच्च और 131500 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 1655 रुपये या 1.26 फीसदी की तेजी के संग 133300 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन दिसंबर वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 132729 रुपये के भाव पर खूलकर, 133859 रुपये के दिन के उच्च और 132492 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 131895 रुपये के पिछले बंद के सामने 1650 रुपये या 1.25 फीसदी की तेजी के संग 133545 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 194747 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 199046 रुपये और नीचे में 194681 रुपये पर पहुंचकर, 192851 रुपये के पिछले बंद के सामने 5280 रुपये या 2.74 फीसदी बढ़कर 198131 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा

था। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 5132 रुपये या 2.65 फीसदी की तेजी के संग 198675 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 5207 रुपये या 2.69 फीसदी की मजबूती के साथ 198700 रुपये प्रति किलो बोला गया।

मेटल वर्ग में 2847.09 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा दिसंबर वायदा 13.1 रुपये या 1.19 फीसदी बढ़कर 1109.9 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता दिसंबर वायदा 1.3 रुपये या 0.41 फीसदी गिरकर 315.4 रुपये प्रति किलो हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम दिसंबर वायदा 2.4 रुपये या 0.86 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 281.3 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा दिसंबर वायदा 45 पैसे या 0.25 फीसदी टूटकर 181.5 रुपये प्रति किलो हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1804.89 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल दिसंबर वायदा 5229 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 5247 रुपये और नीचे में 5206 रुपये पर पहुंचकर, 15 रुपये या 0.29 फीसदी घटकर 5213 रुपये प्रति बैरल के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी दिसंबर वायदा 15 रुपये या 0.29 फीसदी गिरकर 5213 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस दिसंबर वायदा 380.4 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 384 रुपये और नीचे में 374.3 रुपये पर पहुंचकर, 376.5 रुपये के पिछले बंद के सामने 1 रुपये या 0.27 फीसदी घटकर 375.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी दिसंबर वायदा 60 पैसे या 0.16 फीसदी टूटकर 375.6 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ। कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल दिसंबर वायदा सत्र के आरंभ में 933.7 रुपये के भाव पर खूलकर, 6.7 रुपये या 0.72 फीसदी की बढ़त के साथ 934.9 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 15944.64 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 13138.71 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 2129.99 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 193.78 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 16.52 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 506.81 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 386.81 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1408.93 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 15541 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 71186 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 18507 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 286547 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 30681 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 16470 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 39780 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 115635 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 19032 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 40525 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स दिसंबर वायदा सत्र के आरंभ में 32696 पॉइंट पर खूलकर, 32971 के उच्च और 32526 के नीचले स्तर को छूकर, 755 पॉइंट बढ़कर 32905 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल दिसंबर 5250 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 13.8 रुपये की गिरावट के साथ 33.2 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस दिसंबर 380 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 55 पैसे की नरमी के साथ 15.7 रुपये हुआ।

सोना दिसंबर 137000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 638 रुपये की बढ़त के साथ 1723 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी दिसंबर 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 2251.5 रुपये की बढ़त के साथ 5550 रुपये हुआ। तांबा दिसंबर 1110 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 3.8 रुपये की बढ़त के साथ 16.83 रुपये हुआ। जस्ता दिसंबर 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 1.15 रुपये की गिरावट के साथ 2.61 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल दिसंबर 5200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 2.7 रुपये की गिरावट के साथ 42.4 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस दिसंबर 380 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 10 पैसे की नरमी के साथ 19.75 रुपये हुआ।

इसके सामने चांदी दिसंबर 180000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 475.5 रुपये की गिरावट के साथ 1059.5 रुपये हुआ। तांबा दिसंबर 1100 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 7.68 रुपये की गिरावट के साथ 12.37 रुपये हुआ। जस्ता दिसंबर 315 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1.12 रुपये की गिरावट के साथ 3.01 रुपये हुआ।

फियो ने भारत के निर्यात में जोरदार बढ़ोतरी का स्वागत किया, नवंबर में व्यापार घाटे में तेज गिरावट: फियो अध्यक्ष श्री एस सी रल्हन

(जीएनएस)। नई दिल्ली, 15 दिसंबर, 2025। वाणिज्य मंत्रालय द्वारा जारी नवीनतम व्यापार आंकड़ों पर टिपण्णी करते हुए फेडेरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन (फियो) के अध्यक्ष श्री एस सी रल्हन ने भारत के निर्यात में जोरदार बढ़ोतरी पर संतोष जताया जो देश के निर्यात सेक्टर की गतिशीलता और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को प्रदर्शित करता है।

भारत का वस्तु व्यापार नवंबर में 38.13 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया जो 19.37 प्रतिशत की मजबूत वर्ष दर वर्ष वृद्धि को प्रदर्शित करता है। महीने के दौरान वस्तु आयात 62.66 बिलियन डॉलर का रहा। सेवा सेक्टर के मोर्चे पर निर्यात में उल्लेखनीय बढोतरी हुई जो 32.11 बिलियन डॉलर से बढ़कर 35.86 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया। सेवा आयात में पिछले वर्ष की समान अवधि के 17.25 बिलियन डॉलर की तुलना में थोड़ी वृद्धि हुई और यह 17.96 बिलियन डॉलर हो गया।

श्री एस सी रल्हन ने कहा कि सेवा निर्यात में मजबूत गति के साथ वस्तु निर्यात में लगभग 19.4 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि भारत के निर्यात सेक्टर के लिए बहुत आशाजनक संकेत है। व्यापार में तेज गिरावट लगातार जारी भूराजनीतिक तनाव और दुनिया भर में आर्थिक अनिश्चितताओं के बीच भी वैश्विक मांग को दक्षतापूर्वक पूरा करने में भारतीय निर्यातकों की क्षमता को रेखांकित करती है।

फियो अध्यक्ष ने कहा कि कुल मिलाकर, भारत का कुल निर्यात नवंबर में 73.99 बिलियन डॉलर तक जा पहुंचा जो पिछले वर्ष की समान अवधि के 64.05 बिलियन डॉलर की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि है। महीने के दौरान कुल आयात में मामूली गिरावट आई जो जो नवंबर 2024 के 81.11 बिलियन डॉलर की तुलना में घटकर 80.63 बिलियन डॉलर पर आ गया। एक मुख्य सकारात्मक विशेषता वस्तु व्यापार घाटे में आई कमी रही जो अक्तूबर के 41.68 बिलियन डॉलर से कम होकर 24.53 बिलियन डॉलर पर आ गया। यह मजबूत निर्यात गति और बेहतर व्यापार प्रबंधन को प्रदर्शित करता है।

श्री रल्हन ने इस बात पर भी बल दिया कि कई प्रमुख सेक्टरों में निरंतर गतिशीलता के साथ साथ निर्यात बाजारों के विविधीकरण ने निर्यात वृद्धि को सहायता देने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि निरंतर नीतिगत सहायता, बेहतर लॉजिस्टिक्स दक्षता और प्रतिस्पर्धी निर्यात वित्तपोषण के साथ, भारत का निर्यात आगे आने वाले महीनों में इस सकारात्मक मार्ग को बनाये रखने की अच्छी स्थिति में है।

फिये प्रमुख ने दुहराया कि अप्रैल-नवंबर 2025 के दौरान 50 प्रतिशत का उच्च टैरिफ थोपे जाने के बावजूद अमेरिका भारत का शीर्ष निर्यात गंतव्य बना रहा। यह स्पष्ट रूप से भारत के निर्यातक समुदाय की गतिशीलता और अनुकूलता प्रदर्शित करता है। इस अवधि के अन्य प्रमुख निर्यात गंतव्यों में यूएई, नीदरलैंड, चीन, ब्रिटेन, जर्मनी, सिंगापुर, बांग्ला देश, सऊदी अरब और हांगकांग शामिल थे। आयात के मामले में प्रमुख आयातक देशों में चीन, अमेरिका, रूस, सऊदी अरब, इराक, हांगकांग, सिंगापुर, स्विट्जरलैंड और जापान शामिल थे। श्री रल्हन ने दुहराया कि लागत प्रतिस्पर्धा में सुधार लाने, अनुपालन तथा प्रक्रियागत चुनौतियों को सरल बनाने और निर्यात वृद्धि को बनाये रखने तथा व्यापार घाटे में और कमी लाने के लिए बाजार पहुंच बढ़ाने के उद्देश्य से निरंतर नीतिगत उपायों की आवश्यकता है।

निवेशकों का भरोसा दिखा, ICICI प्रूडेंशियल AMC के आईपीओ को दूसरे दिन जबरदस्त रिस्पॉन्स

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की प्रमुख एसेट मैनेजमेंट कंपनियों में शुमार आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल एसेट मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम को बाजार से मजबूत प्रतिक्रिया मिल रही है। आईपीओ के दूसरे दिन तक निवेशकों की दिलचस्पी साफ नजर आई, जिसके चलते यह इश्यू कुल 2.11 गुना सब्सक्राइब हो चुका है। खासतौर पर गैर-संस्थागत निवेशकों और योग्य संस्थागत खरीदारों की ओर से भारी मांग दर्ज की गई है, जिससे बाजार में इस निर्गम को लेकर सकारात्मक माहौल बना हुआ है।

स्टॉक एक्सचेंजों पर उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक, कुल 3 करोड़ 50 लाख 15 हजार 691 इक्विटी शेयरों के मुकाबले 7 करोड़ 38 लाख 73 हजार 206 शेयरों के लिए बोलियां प्राप्त हुई हैं। इसमें गैर-संस्थागत निवेशकों का हिस्सा सबसे ज्यादा उत्साहजनक रहा, जो 3.79 गुना सब्सक्राइब हुआ। वहीं योग्य संस्थागत खरीदारों की श्रेणी में भी मजबूत भागीदारी देखने को मिली और यह हिस्सा 2.91 गुना भर चुका है। हालांकि खुदरा निवेशकों की भागीदारी अपेक्षाकृत धीमी रही और यह श्रेणी अभी 0.83 गुना सब्सक्रिप्शन पर है, लेकिन बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि अंतिम दिन तक इसमें भी तेजी आ सकती है।

यह आईपीओ 12 दिसंबर को निवेश के लिए खुला था और 16 दिसंबर तक खुला रहेगा। करीब 10,602.65 करोड़ रुपये के इस बड़े निर्गम में लगभग 4.90 करोड़ शेयरों की पेशकश की गई है। यह पूरा इश्यू ऑफर फॉर सेल के रूप में लाया गया है, यानी इससे जुटाई जाने वाली राशि कंपनी के पास न जाकर मौजूदा शेयरधारकों को मिलेगी। निर्गम संरचना के तहत 50 प्रतिशत हिस्सा योग्य संस्थागत निवेशकों के लिए, 35 प्रतिशत खुदरा निवेशकों के लिए और 15 प्रतिशत गैर-संस्थागत निवेशकों के लिए आरक्षित किया गया है।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल एएमसी की मजबूत कारोबारी स्थिति इस आईपीओ की लोकप्रियता का बड़ा कारण मानी जा रही है। एक्टिव म्यूचुअल फंड क्वार्टरली एवरेज एसेट्स अंडर मैनेजमेंट के आधार पर यह कंपनी देश की सबसे बड़ी एसेट मैनेजमेंट कंपनियों में शामिल है। 30 सितंबर 2025 तक कंपनी का बाजार हिस्सा 13.3 प्रतिशत रहा है, जो इसकी मजबूत पकड़ और निवेशकों के भरोसे को दर्शाता है। लंबी अवधि में म्यूचुअल फंड उद्योग के विस्तार और रिटेल निवेशकों की बढ़ती भागीदारी को देखते हुए बाजार जानकार इस आईपीओ को लेकर आशावादी नजर आ रहे हैं। इसी वजह से शुरुआती दिनों में ही इसे अच्छा रिस्पॉन्स मिला है और आने वाले दिनों में निवेशकों की दिलचस्पी और बढ़ने की उम्मीद जताई जा रही है।